वर्ष 3, अंक 4, अप्रैल 2003 हिन्दी मासिक पत्रिका मूल्य मात्र 3/ रुपये

अंक 4, मार्च 2003 हिन्दी मासिक पत्रिका

विश्व स्नेह समाज

क्या वर्तमान शिक्षा पद्धति कारगर है?

चार कहानियाँ

अमेरिका ने क्या दिया ईराकी जनता को?

निःशुल्क प्रवेश प्रारम्भ निःशुल्क प्रवेश प्रारम्भ ☎ :2456554

तजल्ली मेमोरियल जूनियर हाईस्कूल

अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम

कक्षाः नर्सरी से 8 तक

विशेषतांएः

- lh0ch0,l0bZ0ikB~;Øe rFkk oEI;wVj f'k{kk
- laLd`r@mnwZ ,d fo'k; ds :i esa
- Li/kZ ovuqHkoh v/;kfid,sa
- [kqys eSnku ds lkFk vkd"kZd [ksy lkeku
- V"kyh o fjD'kk miyC/k
- Nk=ksa dh fidfud izksxzke

सम्पर्क स्थल : **41-D/IM/1** मस्तान मार्केट के पीछे, करैली, इलाहाबाद

प्रधानाचार्या
शाइस्ता वकील

राजकीय मान्यता प्राप्त राजकीय मान्यता प्राप्त दूरभाष–2694856

गुरुकुल विद्या मन्दिर

176 वी, बोगवा गली, चक रघुनाथ, नैनी, प्रयाग

कक्षा शिशु से हाईस्कूल तक की उत्तम शिक्षा व्यवस्था

0कुशल शिक्षण व्यवस्था 0 अनुभवी आचार्य 0कम्प्यूटर शिक्षण निःशुल्क

सहयोगकांक्षी
देवशरण पाण्डेय

प्रधानाचार्या
सुश्री गीता पाण्डेय

मान्यता प्राप्त मान्यता प्राप्त ☎: 2504838

के0के0मेमोरियल जू0 हाईस्कूल

(इलाहाबाद महिला एवं बाल कल्याण समिति द्वारा संचालित)

बी–1121–2, करैली स्कीम, मजार के पास, इलाहाबाद

नर्सरी से कक्षा दस तक

प्रधानाचार्या
रीना श्रीवास्तव
एम.ए., बी.एड. सी.लिब

विद्या निकेतन

करामत की चौकी, करैली, इलाहाबाद
☎: 2658021(R) 2551099(O)

0 एन.सी.आर.टी. पाठ्यक्रम 0नर्सरी से हाईस्कूल शिक्षा
0 अनुशासन एवं व्यक्तित्व विकास
0 कुशल अध्यापकों द्वारा शिक्षण 0 विशाल परिसर

एक बार अवश्य सम्पर्क करें

प्रधानाचार्य
त्रिवेणी सिंह

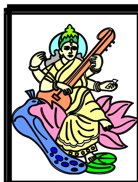

☎2699180

m0iz0 ljdkj }kjk ekU;rk izkIr

शुभम शिक्षा निकेतन इण्टरमिडिएट कॉलेज

d{kk % ds-th- ls 12 rd ¼foKku ,oa dykoxZ½

ckyd@ckfydk,A

प्रबंधक
रमाकांत मिश्र
(एम.काम)

पताः शिव नगर, नैनी, इलाहाबाद

प्रधानाचार्य
दयाशंकर मिश्रा
(एम.ए.एल.एल.बी.)

☎2656686

खलील मेमोरियल गर्ल्स हाईस्कूल

अकबरपुर चौराहा, इलाहाबाद

कक्षाः नर्सरी से 10 तक (विज्ञान एवं कला वर्ग) सिलाई कढ़ाई पेंन्टिग अनुभवी एवम् योग्य शिक्षिकाओं द्वारा शिक्षण कार्य

गॉधी मेमोरियल गर्ल्स हाईस्कूल

कक्षा नर्सरीसे 8 तक (अंग्रेजी एवं हिन्दी मीडियम) बालक एवं बालिकाएं छात्रों के उज्ज्वल भविष्य के लिए उचित शिक्षण व्यवस्था

गौस नगर, करैली, इलाहाबाद

प्रबंधक
अकील अहमद

यहॉ पर बी.ए,बी.एड,/मोअल्लिम आदि का फार्म भरने हेतु सम्पर्क करें।

प्रधानाचार्या
श्रीमती ज़रीना खातून

नवभारती पब्लिक स्कूल

पताः 189,बी/1, नागवासुकी मार्ग, दारागंज, इलाहाबाद

कक्षा : नर्सरी से कक्षा आठ तक

i<+kbZ ds lkFk&2 dEI;wVj dh f'k{kk] dPpksa dh lHkh izdkj dh lqfo/kk]

लाइट न होने पर जनरेटर की सुविधा

नोटः अनुभवी अध्यापिकाओं की आवश्यकता है।

प्रधानाचार्या
उषारानी श्रीवास्तव

संस्थापित :1987

उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

☎ 2636421

श्याम लाल इंटर कॉलेज

चकिया, कसारी–मसारी, इलाहाबाद

कक्षा :केजी से 12 तक (विज्ञान एवं कलावर्ग)

(बालक/बालिकाओं)

प्रबंधक
अनिल कुशवाहा

25 जून से प्रवेश प्रारम्भ है।

प्रधानाचार्या
सुनीता कुशवाहा
(एम.एससी.बी.एड)

प्रवेश प्रारम्भ प्रवेश प्रारम्भ प्रवेश प्रारम्भ ☎2550024

इण्डियन एन्जील्स स्कूल

(अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम, को–एजुकेशन)

नर्सरी से कक्षा 5 तक

विशेष सुविधा

0 विद्यालय की अपनी मकान एवं बड़ी कक्षाएं 0 खेल–खेल में शिक्षा की व्यवस्था 0आवागमन की सुविधा की उपलब्ध

प्रबंधक
जुलफेक़ार अली वकील

सी–718, जी.टी.बी. नगर, करैली, इलाहाबाद

प्रधानाचार्या
ज़किया फ़ात्मा

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

स्नेहागन कला केन्द्र

शाखा : 1. एल.आई.जी. 93,नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
2. एम.टेक. कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद

0 सिलाई 0 कढ़ाई 0 पेंटिंग 0 कम्प्यूटर 0 ब्यूटिशियन 0 इंग्लिश स्पोकेन

oVU;izkQsuyclksZsl,caO;okf;dclksZsl

नोटः हमारे यहॉ अनुभवी अध्यापको द्वारा ट्रेनिंग की व्यवस्था है। ट्रेनिग के उपरान्त प्रमाण पत्र भी प्रदान किया जाता है।

विभिन्न क्षेत्रों में शाखा खोलने के इच्छुक
व्यक्ति/महिलाएं शाखा कार्यालयों में सम्पर्क करें

फोन न0: 311887

कमल बैट्रीज

प्रेमनगर, कुण्डा, प्रतापगढ़

हमारे यहॉ इनवर्टर, बैट्री, चार्जर, इमरजेंसी लाइट, स्टेपलाइजर आदि कुशल कारीगरों के द्वारा बनाकर गारन्टी के साथ उचित मूल्य पर दिये जाते हैं।

एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

प्रो0 बबलू विश्वकर्मा

गुप्त रोगों का सफल ईलाज

नामर्दी, स्वप्न दोष, शीघ्र–पतन, धातु पतला, छोटापन, पतलापन, टेढ़ापन, लिकोरिया, मासिक गड़बड़ी, चेहरे की छाईयां और गुप्त रोग

+ हकीम एम0शमीम +

SC. UM(CAL) Reg.

होटल समीरा
काटजू रोड निकट रेलवे स्टेशन
इलाहाबाद

मिलने का समयः
प्रत्येक माह 16 से 20 तारिख
सुबहः 9 से रात्रि 8 बजे तक।

वर्ष : 3, अंक : 23, अगस्त 2003

हिन्दी मासिक पत्रिका

स्नेह समाज

प्रधान संपादक एवं प्रकाशक

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कार्यकारी संपादकः डॉ0 कुसुम लता मिश्रा

संयुक्त संपादक

मधुकर मिश्रा

सहायक संपादक

0 रजनीश कुमार तिवारी 0 सीमा मिश्रा

सलाहकार संपादक

नवलाख अहमद सिद्दीकी

साहित्यसंपादक :

डॉ0 भगवान प्रसाद उपाध्याय

ब्युरो प्रमुखः

गिरिराजजी दूबे

स्वत्वाधिकारी, सपांदक, प्रकाशक व मुद्रक **गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी** द्वारा **भार्गव प्रेस,** बाई का बाग, इलाहाबाद, से मुद्रित कराकर 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : 8380/2001

पत्रिका के लिए सम्पर्क करें:

पापुलर बुक डिपों,

इलाहाबाद गर्ल्स डिग्री कॉलेज, कैम्पस, जीरो रोड बस अड्डा के पास, इलाहाबाद

लक्ष्मी बुक हाउस

सिविल लाईन्स, इलाहाबाद

विद्यार्थी बुक सेन्टर

चक भटाही, नैनी, इलाहाबाद

रवि स्टेशनर्स

कालिन्दीपुरम पुलिस चौकी के पास, कालिन्दीपुरम, राजरूपपुर, इलाहाबाद

सम्पादकीय

प्रिय पाठक मित्रों,

नमस्कार

किसी भी पत्रिका में शत् प्रतिशत सुधार होना नैसर्गिकता एवं विलक्षणता का विलक्षण समायोजन होगा। रही बात 'विश्व स्नेह समाज' की तो यह धरातल पर रह कर सोचती है। हामरे आपके बीच में हंसती, खेलती है, तो इसकी थोड़ी बहुत कमियां धीरे–धीरे स्वतः ही लोज हो जायेगी और यह हमारे पाठक और लेखकों के सहयोग से ही सम्भव है। दोस्तों हम सब पाठक ही एक लेखक है। हर व्यक्ति में लिखने की सोचने की शक्ति अर्न्तर्निहित होती है, और वह उचित भूमि, अवसर, पाने पर स्वतः स्फूर्त हो जाती है। मित्रो हर व्यक्ति के पास कल्पना रूपी जादू की बूटी होती है। और हमारी कल्पना ही हमें प्रस्थान बिन्दु से हट कर उसे सृजित करती है। उसे नया कलेवर देती है। तब जाकर सामूहिक रूप से कल्पना की सर्वोत्कृष्ठ अभिव्यक्ति होती है। और जब व्यक्ति अपने स्वार्थ और हित के लिए नकल उतारी गई रचनाओं में जोड़ घटा कर उसे साहित्य के रूप में परोसता है तो वह किसी दूसरे के द्वारा की गयी उल्टी प्रतीत होती है। जो कालांन्तर में सड़ांध पैदा करती है और उस साहित्यकार का असमय साहित्यिक निधन हो जाता है।

अतः पाठकों से अनुरोध है कि रचनायें मूल एवं स्वरचित ही भेंजे। हर साहित्यिक सत्ता ऐसी नकल की गई परिकल्पना का अवश्य खण्डन करती ही करती है।

यह पत्रिका मासिक के रूप में अपना दूसरा वर्ष पूर्ण करने जा रही है। आप सब इसके सुदीर्घ जीवन के लिए कामना करें। आशा आप सभी तपती गर्मी से राहत पाकर शीतल ध्वनीभूत बूदों से लबरेज हो रहे होंगे। सच जीवन में हमें समरस होना चाहिए। दुःख के बाद सुख एवं सुख के बाद दुख आते रहते हैं और श्वेत चमकदार मणियों को दुख समुद्र से सुख में परिवर्तित कर हमारे जीवन को आलोकित करते हैं। हमें दुख का स्वागत करना चाहिए जिसमें सुख का उल्लास निहित हैं।

"नित्य समरसता का अधिकार, उमड़ता कारण जलधि समान।
व्यथा से नीली लहारों बीच, विकसते सुखमणिगण द्युतिमान।"

कुसुमलता मिश्रा 'सरल'
कार्यकारी संपादिका

iathd`rdk;kZy; ,oa i=O;ogkj dk irk % ,y-vkbZ-th-&93] uhel jk;] eq.Msjk] bykgkckn eks0% 3155949 QSDl la0 % 0532&655565]
bykgkckn dk;kZy; % ,e0Vsd dEI;wVj ,tqds'ku lsUVj] ikoj gkml ds ikl] /kqLk] bykgkckn ☎ 2552444
y[kuÅ vkWfQl % 282@380] [kku fey jksM] dkuiqj jksM] y[kuÅ ☎ (0522)-2457452, 2457920
nsofj;k vkWfQl% vkpk;Z jkepUnz 'kqDyuxj] HkqtkSyh dkWyksuh] nsofj;k ☎ (05568)25085

बहुत कठिन है डगर रेलयात्रा की

0 जबसे माननीय नीतीश कुमार का केंद्रीय रेलमंत्री के रूप में सफर शुरू हुआ तबसे ही रेल हादसों की शुरूआत हुई। शायद ही कोई सप्ताह बीतता हो जब कोई एक छोटी घटना और महीने के अंदर एक बड़ी घटना न घटती हो। अगर इन्हें हादसों, दुर्घटनाओं का मंत्री कहा जाय तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

ब्यूरो रिर्पोट

आखिर हमारे माननीय रेल मंत्रालय की लापरवाही और अव्यवस्था का खेल किस दिन तक जारी रहेगा? जब तक कि हादसे महीने, हफ्ते से हटकर प्रतिदिन होने लगेंगे। आध्र प्रदेश के गोलकुंडा में एक और रेलदुर्घटना ने रेल मंत्रालय को घेरे में खड़ा ही नहीं किया है, बल्कि यह साबित कर दिया है कि रेलमंत्रालय की संपूर्ण सुरक्षा व्यवस्था संदेह और सवालों के घेरे में खड़ी है। गलती एक बार हो सकती है। बार–बार एक ही गलती को दुहराया जाना लापरवाही हद को पार कर चुकी है।

लगातार रेल दुर्घटनाओं को देखकर तो यहीं कहा जा सकता हैं कि यात्रियों की जानमाला की सुरक्षा की चिता रेलमंत्रालय को नहीं हैं और न ही रेलमंत्रालय को होने वाली सरकारी नुकसानों की परवाह है। प्रत्येक दुर्घटना के बाद रेल मंत्रालय और हमारे मानानीय रेलमंत्री वही घिसीपीटी लाइन दोहराते है–रेलमंत्रालय दुर्घटनाओं को रोकने और रेलयात्रियों की जान माला की रक्षा करेगा। किन्तु उसकी घोषण का कहीं भी असर देखने को नहीं मिलता है। रेलवे अधिकारियों और कर्मचारियों का इस मामलें में रवैया टालमटोल की ही रहा है।

आखिर रेलमंत्रालय की इन गलतियों का खामियाजा हमारे सम्मानित यात्रीगण कब तक भुगतेंगे? कब सरकार और मंत्रालय इस मामले में सचेत होंगे? सबसे अहम् मुद्दा तो यह है कि छोटी सी बात पर आवाज उठाने वाली सरकार इन रेल हादसों पर चुप्पी साधान के सिवा कुछ नहीं करती है। सरकार रेलमत्रालय की लापरवाही पर चुप्पी साधकर एक तरह से रेलमंत्रालय पर पर्दा ही डाल रही है। विपक्ष भी गंभीर नहीं है, वह रेल मंत्रालय को घेरने में नाकाम है।

नीतिश कुमार ने 2003–2004 को यात्री सुरक्षा और सुविधा वर्ष घोषित कर रखा है। रेलमंत्रालय इसका काफी जोर शोर से प्रचार भी कर रहा है। रेल सुरक्षा के लिए 17,000 करोड़ रूपये की विशेष व्यवस्था की गई है। लगातार हो रही रेल दुर्घटनाओं को देखकर तो यही कहना ज्यादा उचित होगा कि 2003–2004 रेल यात्री सुरक्षा का वर्ष न होकर, रेल यात्री दुर्घटना की वर्ष है। रेलमंत्री का कहना है कि उनके कार्यकाल मे कम दुर्घटनाएं हुई है। शायद उन्हें प्रतिदिन रेलहादसों के होने की चाहत है।

गोलकुंडा रेल दुर्घटना के बारे में भी रेलमंत्रालय का कहना है कि यह दुर्घटना मानवीय भूल के कारण हुई है। गाड़ी का ब्रेक फेल होने के कारण बदहवासी में ड्राइवर ने गलत लाइन पर गाड़ी दौड़ा दी, जिसके कारण यह हादसा हुआ। ब्रेक फेल होने की स्थिति में रेल मंत्रालय के पास कोई आपात व्यवस्था तो होनी ही चाहिए थी। ब्रेक फेल होने की जिम्मेदारी सिर्फ ड्राइवर पर नहीं डाली जा सकती।

जैसा की अक्सर होता है घटनाओं और दुर्घटनाओं के बाद उन जांच समितियों का गठन कर दिया जाता है और ये जांच समितियां सरकारी पैसों को खर्च कर कर्मचारियों को बचाने का भरपूर प्रयास करती है। यही कारण है कि रेलवे के अधिकारी और कर्मचारी अपने कार्य के प्रति उदासीन और असंवेदनशील हो गये है। उन्हें मालूम है कि उनका कुछ विगड़ने वाला नहीं है। जब तक दोषी अधिकारियो व कर्मचारियों को दण्डित नहीं किया जाएगा तबतक रेल मंत्रालय एवं रेलयात्रा यात्रियों के लिए 'बहुत कठिन है डगर रेल यात्रा की बने रहेगी।

विगत दिनों से रेलगाड़ियों में आगजनी की घटनाएं भि हो रही है। पंजाब में फ्रंटियर एक्सप्रेस में आग लग जाने से कई यात्रियों की मौत हो गई थी। रेलवे ने आगजनी को अपनी व्यवस्था की नाकामी नहीं माना था और यात्रियों को ही दोषी ठहराया था।

रेलमंत्रालय के अधिकारी कोई न कोई बहाना बनाकर अपना पल्ला झाड़ते आए हैं, लेकिन अब इस परंपरा पर अंकुश लगना ही चाहिए। इस पर रेलमंत्री को भी गंभिरता से ध्यान देना ही होगा वरना वे अब तक के सबसे अधिक दुर्घटना वालें रेलमंत्री साबित होगें। ○

उच्च शिक्षा अब गरीबों के बस की बात नहीं

✡शीघ्र ही उच्च शिक्षा का पूर्ण स्वरूप ही बदल जाएगा। गॉव, देहात से आए निम्न एवं गरीब तबके का अब कोई भी छात्र शहर, महानगर में कॉलेज या विश्वविद्यालय की पढ़ाई ट्यूशन के भरोसे नहीं कर पाएगा।

✡शिक्षा एक बाजार के रूप में तब्दील हो जाएगी जिसमें नफा नुकसान के हिसाब से उसके सारे निर्णय होंगे।

✡'मौजूदा स्थिति में करदाताओं के पैसे का बेहतर इस्तेमाल बुनियादी शिक्षा और माध्यमिक शिक्षा पर खर्च किया जा सकता है क्योंकि इस क्षेत्र में निजी क्षेत्र को आकर्षित करना कठिन है। वहीं निजी क्षेत्र को उच्च शिक्षा में निवेश के लिए आकर्षित करना जरूरी है। सरकार को अपनी जिम्मेदारी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा तक ही सीमित रखे।'

✡उद्योगपतियों की राय पर विदकने वाले डॉ0 जोशी के नेतृत्वमें वे तमाम कदम उठाए जा रहे हैं जिनसे उद्योगपतियों की बांछे खिल रही है।

स्नेह, ब्यूरो रिर्पोट

कुछ दिनों पहले प्रधानमंत्री कार्यालय से जुड़े उद्योगपतियों एक समूह की रपट को लेकर शिक्षा जगत में काफी हंगाम खड़ा हुआ था। मुकेश अंबानी और कमारमंगलम की अध्यक्षता वाले इस दल ने कुछ देशों का अध्ययन करने के बाद भारत के संदर्भ में कुछ अभूतपूर्व सिफारिशें की थी। शैक्षणिक जगत बुद्धिजीवियों के इस रपट पर हल्ला मचाने पर मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ0 मुरली मनोहर जोशी ने कहा–' सरकार इस रपट पर अमल नहीं करने जा रही है। सरकार माइंड पर मनी का बर्चस्व नहीं होने देगी। लेकिन उनका यह वाक्य वाकई यकीन करने के लायक नहीं है। सरकार चोरी–चोरी चुपके–चुपके उन एजेंडो को लागू कर रही है जो उद्योगपतियों की रपट में थी।

शीघ्र ही उच्च शिक्षा पूर्ण स्वरूप ही बदल जाएगा। गॉव, देहात से आए निम्न एवं गरीब तबके का अब कोई भी छात्र शहर, महानगर में कॉलेज या विश्वविद्यालयकी पढ़ाई ट्यूशन के भरोसे नहीं कर पाएगा। उच्च शिक्षा हासिल करने के लिए अब लम्बी रकम की आवश्यकता पड़ेगी। सरकार उद्योगपतियों के आगे घूटने टेकते हुए उच्च शिक्षा को उनके रहमोकरम पर छोड़ने का इरादा कर चुकी है। फलस्वरूप शिक्षा एक बाजार के रूप में तब्दील हो जाएगी जिसमें नफा नुकसान के हिसाब से उसके सारे निर्णय होंगे। ऐसे में व्यक्तित्व व समाज के विकास में उच्च शिक्षा की अहमियत की पुरानी परिभाषा निस्प्राण हो जाएगी।

शिक्षा पर उद्योगपतियों की राय में–'बजटीय घाटा को देखते हुए केन्द्र व राज्य सरकार के लिए सामाजिक क्षेत्र पर खर्च करना लगातार कठिन होता जा रहा है। बजट का ज्यादातर हिस्सा सिर्फ वेतन व दूसरे पारिश्रमिकों पर खर्च किये जाते हैं। लिहाजा, मौजूदा स्थिति में करदाताओं के पैसे का

बेहतर इस्तेमाल बुनियादी शिक्षा और माध्यमिक शिक्षा पर खर्च किया जा सकता है क्योंकि इस क्षेत्र में निजी क्षेत्र को आकर्षित करना कठिन है। वहीं निजी क्षेत्र को उच्च शिक्षा में निवेश के लिए आकर्षित करना जरूरी है। सरकार को अपनी जिम्मेदारी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा तक ही सीमित रखे।' उद्योगपतियों की इस सिफारिश पर स्वदेशी के प्रबल पैरोकार डॉ0 मुरली मनोहर जोशी भी विदके, लेकिन सच्चाई यह है कि अब उन्ही के नेतृत्वमें वे तमाम कदम उठाए जा रहे हैं जिनसे उद्योगपतियों की बांछे खिल रही है। देश के कुछ चुनिंदा विश्वविद्यालयों को छोड़कर देश के अधिकतर विश्वविद्यालय इन दिनों जबरदस्त आर्थिग तंगी के शिकार है। राज्य सरकारों के अधीनस्थ विश्वविद्यालयों को तो वैसे भी केंद्र सरकारा गैर योजना मद में ही सहायता देती है। लगातार शिक्षा के मद में बजटीय साझेदारी कम हो रही है। पहली पचवर्षीय योजना से लेकर चौथी पंचवर्षीय योजना तक उच्च शिक्षा की बजटीय हिस्सेदारी 0.71 फीसदी से बढ़कर 1.24 फीसदी होने के बाद से इसमें लगातार गिरावट आ रही है। सातवी योजना में 0.53, आठवीं में 0.35 फीसदी ही रह गई है। एक तो शिक्षा पर खर्च ही कम किया जा रहा है और दूसरे उसे नजरअंदाज भी किया जा रहा है। शिक्षा में सुधार के लिए बैठाए गए कोठारी व मल्होत्रा कमीशन ने सकल घरेलू उत्पाद का 6 फीसदी शिक्षा पर खर्च करने की सिफारिश की थी लेकिन अभी भी शिक्षा पर चार फीसदी से कम खर्च किया जा रहा है। शिक्षकों के राष्ट्रीय संगठन फेडकुटा के पूर्व अध्यक्ष प्रो0 आनंद कुमार का कहना है–"राज्य सरकारों के अधीन चल रहे विश्वविद्यालय तो कंगाल हो गए हैं। वहां शिक्षकों को छह महीने से वेतन ही नहीं मिले है। केंद्र सरकार कुछ बड़े विश्वविद्यालयों की मदद कर अपने दायित्व से बचना चाहती है।"

राज्य सरकारों के पास पैसे नहीं है इसलिए कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों को जता दिया गया है कि वे अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश करे। उधर कॉलेज व विश्वविद्यालय खड़े होने के नाम पर छात्रों को लूट रहे हैं। केंद्र सरकार का दावा है कि केंद्रीय विश्वविद्यालयों में लगभग पिछले तीस सालों से फीस में कोई बढ़ोत्तरी नहीं की गई है। लेकिन यह महज छलावा है। दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षक संघ के पूर्व अध्यक्ष का कहना है कि 'सरकार ट्यूशना फीस न बढ़ाकर अपनी पीठ थपाथपा रही है। लेकिन सच्चाई यह है कि कॉलेज, विकास शुल्क, बगीचा शुल्क, पार्किग शुल्क, लाइब्रेरी शुल्क व प्रयोगशाला शुल्क जैसी न जाने कितने तरह के शुल्क ले रहे हैं। सरकार इसे रोकने की कोशिश नहीं करती है क्योंकि वह खुद भी यही चाहती है। विगत पांच सालों में उच्च शिक्षा दस गुना मंहगी हो गई है।

उच्च शिक्षा से सरकार के हाथ खींचने से निजी और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की बन आई है। उन्हें मालूम है कि इस क्षेत्र में निवेश कर भारी मुनाफा कमाया जा सकता है। सिटी बैंक व दूसरे निजी बैंकों ने तो बकायदा सर्वे के जरिए यह पता करने की कोशिश की है कि पढ़ाई के लिए ऋण देने का धंधा कितना फायदेमंद हो सकता है। इनका मुख्य निशाना फिलहाल एमबीए और कम्प्यूटर जैसे पाठ्यक्रमों के लिए है। आगे वे इंजीनियरिंग व मेडिकल जैसे क्षेत्र में भी कदम बढ़ाने का इरादा रखते हैं। राज्यों में धड़ल्ले से निजी विश्वविद्यालयों खुल रहे है। उत्तर प्रदेश व छत्तीसगढ़ सरकारों ने बकायदा इसकी इजाजत भी दे दी है। मौजूदा स्थिति में भी यूजीसी चाहे तो निजी विश्वविद्यालय खोलने के खिलाफ कार्रवाई कर सकती है लेकिन उसकी ओर से इस बारे में अभी तक कोई प्रतिक्रिया ही नहीं जताई है। हाल ही में केंद्र सरकार ने एकमुश्त डीम्ड यूनिवर्सिटी का दरजा दिया है जो अपने बूते संसाधन का जुगाड़ कर सकते हैं। इन्हें अब कई मामलों में खुद ही फैसला लेने का अधिकार मिल गया है।

अगर इसी तरह बुनियादी शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच फर्क होता रहा तो शीघ्र ही सामाजिक ढांचा ही छिन्न–भिन्न हो जाएगा।

शिक्षा में गिरावट ही नहीं आयी है, बल्कि उत्थान हुआ है

डॉ. अशोक मिश्रा

शिक्षा में गिरावट ही नहीं आयी है बल्कि उत्थान हुआ है। आज के छोटे–छोटे बच्चेंजितनी जानकारी प्राप्त कर लेते है। उतनी जानकारी आज के दस वर्ष पूर्व ग्रेजूएट छात्रों को भी नहीं होती थी। गिरावट तो नैतिकता व अनुशासन में आयी है। जब अभिभावक यह सोचता है कि छात्र को पढ़ा लिखा कर पैसा ही कमाना मूल्य उद्देश्य है। वह उनके अध्ययन के प्रति उतना जागरूक नहीं होता जितना कि होना चाहिए। अध्यापक यह सोचता है कि छात्रों को जब पढ़ने में लगन हे हीं नहीं है तो अनावश्यक इतनी मेहनत क्यों की जाय। उसे पग–पग पर अर्थ की जरूरत पड़ती है जिससे वे ट्यूशन व कोचिंग का सहारा लेता है। छात्र को अपने अभिभावक का जागरूक न होना, शिक्षकों का शिक्षा के प्रति रूझान कम होना शिक्षा के प्रति रूचि को कम करता है। समाज में नैतिकता को बढ़ाने के लिए उनको बचपन से ही नैतिकता व सदाचार की जानकारी दी जानी चाहिए। नैतिक शिक्षा को अनिवार्य विषय के रूप में शामिल किया जाना चाहिए। बच्चों को साक्षर बनाने के बाद उनके रूझान को देखते हुए उसी तरह की शिक्षा व माहौल बनाया जाना चाहिए। जैसे अगर अभिभावक को

या शिक्षक को ऐसा आभास होता है कि छात्र का किसी विशेष खेल के प्रति अधिक रूझान है तो उस खेल से सम्बंधित आवश्यक जानकारियां, उस खेल के अच्छे खिलाड़ियों के बारे में जानकारी प्रदान करना व उस खेल में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक संसाधन की व्यवस्था की जानी चाहिए। छात्रों पर अनावश्यक अपनी रूचि के अनुसार बोझ नहीं डालना चाहिए। शिक्षा को व्यवसायिक बनाना चाहिए। जहां तक सम्भव हो शिक्षा को रोजगार परक बनाया जाना चाहिए।

शिक्षा में आयी गिरावट का मूल कारण समाज का नैतिक पतन है

श्री पं0 राजेन्द्र त्रिपाठी,

शिक्षा में आयी गिरावट का मूल कारण समाज का नैतिक पतन है। अध्यापक की ये जिम्मेदारी मूलतः है। तदोपरान्त छात्र व अभिभावक की। वैस हम मूलतः अर्थप्रधान समाज को ही दोषी ठहरा सकते है। आज का छात्र, अध्यापक व अभिभावक केवल अर्थाजन की सोचता है। अर्थ की सोचच में वह अपना नैतिक व शिक्षा का पतन करता जा रहा है। छात्रों को विनयशील होना चाहिए। बिना विनम्र हुए शिक्षक से कुछ सीखा नहीं जा सकता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति में सुधार अतिआवश्यक है। सबको साक्षर बनाकर छोड़ दिया जाए केवल पढ़ने वालों को ही पढ़ाया जाय। छात्रों अभिरूचि के अनुसार ही शिक्षा दी जाए। शिक्षा रोजगार परक होनी चाहिए। समाज में नैतिकता की बृद्धि के लिए एक वर्ग तैयार किया जाए जो कि सामाजिक नैतिकता का दायित्व वहन करे। अगर पूरानी गुरू परम्परा जीवित कर दी जाए तो शिक्षा की सारी बुराईया समाप्त हो जाएगी। आज परिवार में कोई ऐसा सदस्य नहीं होता जिनकी बातें सभी लोग माने। पहले गुरू की बातें पूरा परिवार मानता था ऐसा नहीं है कि केवल आज के लोग ही व्यस्त है। पहले तो अभिभावक व्यस्तता के साथ ही साथ अनपढ़ भी हुआ करते थे। तब भी बच्चे नैतिकता से पढ़ते थे।

अगर डिग्री ही बाटनी है तो मुलायम सिंह यादव के अनुसार सबको बाट दी जाए। उसके बाद जो ज्ञार्नाजन करना चाहे उन्हें ज्ञान दिया जाए। बाकी को मिलेट्री, पुलिस, होमगार्ड व लेबर बनाकर काम पर लगा दिया जाय। लोहे को लोहे से ही काटा जा सकता है। जब पढ़ेगे नहीं, गुरू का सम्मान नहीं करेंगे, माता–पिता का आज्ञाओं का पालन नही करेगें तो जाए लड़े–मरे।

आइये जाने कुछ लोगों के विचार–

1. उच्च शिक्षा के निजीकरण की कोशिश असरदार ढंग से चल रही है। सरकार बकायदा इसे बढ़ावा दे रही है। सरकार की नीति को देखकर लगता है सरकार यह मान चुकी है कि व्यवसायिकरण से शिक्षा का विस्तार होता है तो होने दिया जाए। उद्योगपतियों का उच्च शिक्षा पर शिकंजा कसता जा रहा है। वे तरह–तरह के कोर्स बाजार में ला रहे हैं। जिनमें इन्हें खरीदने की कुव्वत है वे इसे खरीद रहे हैं। खासकरा, मेडिकल व इंजीनियरिंग में अभी तक ऐसा ही हुआ है।

2. वैश्वीकरण और अंतरराष्ट्रीयकरण का प्रभाव शिक्षा पर भी पड़ा है। हम इसे रोक भी नहीं सकते। हम संतुलित नीति में विश्वास करते है।

3. शिक्षा का अगर व्यवसायीकरण हो रहा है तो कोई बूरा नहीं है लेकिन सरकार को इनकी फीस पर नजर रखनी चाहिए वरना ये मनमाने तरीके से फीस वसूली करेंगे।

4. सरकारी एवं अद्धसरकारी कॉलेजों में पढ़ाई केवल नामात्र की होती है ऐसे में निजी विद्यालयों, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों के खुलने से कम से कम पढ़ाई की उचित व्यवस्था तो होगी। उनमें आये दिन हड़ताल का सामना तो नही करना पड़ेगा, राजनीति होने के भी चासं कम होंगे।

Ph:(O) 637469, (R)636305

शिक्षा विकास के लिए सतत् प्रयत्नशील

जे०पी० एकेडमी की गतिविधियाँ

1. जगपत सिंह सिंगरौर महाविद्यालय,जे0पी0 नगर, सुलेम सराय, इलाहाबाद।
2. जगपत सिंह सिंगरौर बालिका इन्टर कॉलेज, नींवा, इलाहाबाद
3. गिरधारी सिंह जगपत सिंह सिंगरौर इन्टर कॉलेज, मकनपुर, इलाहाबाद
4. छप्प्ज्ए ड्रजि का कम्प्यूटर प्रशिक्षण संस्थान जे0पी0 नगर, इलाहाबाद

श्री कमलेश सिंह,
चेयरमैन

नैनी वासियों के लिए एक अनमोल तोहफा

जें0 एम0 स्कूल एवं कॉलेज नैनी वासियों के लिए एक अनमोल तोहफा है, जो कि पच्चीस साल पुराने एन.जी.ओ से जुड़ा है जो जहॉंगीर मेमोरियल चैरिटेबल सोसायटी के नाम से जाना जाता है। नैनी में अंग्रेजी माध्यम एवं एक अनुशासित बोर्ड के अभाव को देखते हुए इस स्कूल की नवीन सत्र 2003–04 में स्टूडेन्टस को आई.सी.एस.ई. प्रणाली पर आधारित कक्षा बारह तक की साइन्स, कामर्स एवं कला वर्ग की शिक्षा देने के लिए तैयार है। कॉलेज लगभग दस हजार वर्ग क्षेत्रफल में स्थापित है जिसमें कि बच्चों के सर्वागीण विकास हेतु खेलकुद, व्यायाम, जिमानास्टिक आदि की पूर्ण व्यवस्था की गयी है। कम्प्यूटर शिक्षा कक्षा एक से अनिवार्य है एवं इसके लिए कम्प्यूटर लैब, इंटरनेट के साथ स्थापित किया गया है। हमारे प्रबंधन कमेटी ने विशप जार्ज स्कूल एवं कॉलेज जो कि शहर का प्रतिष्ठित स्कूल है से पूर्ण संबंध (संरक्षण) प्राप्त किया है। उसके चेयरमैन माननीय "जावेद वख्त" एक अनुभवी व्यक्ति है। जिनके संरक्षण में निश्चित ही स्कुल नया आवाम प्राप्त करेगा। स्कुल में छोटे बच्चों नर्सरी के लिए अलग ब्लाक का निर्माण किया गया है। जिसमें रेलवे सिस्टम एवं आडियों कान्सेप्ट पर आधारित एक क्रियात्मक पढ़ाई का आयोजन है। बच्चों के नेतृत्व के विकास के लिए तमाम प्रकार के एक्टीवीटी का प्रबंध किया गया है एवं प्रतिमाह साइकोलाजिस्ट द्वारा बच्चों का साइकोलिस्ट टेस्टिग एवं उसके अनुरूप पढ़ाई के स्तर में बृद्धि का प्रस्ताव रक्खा गया है। इस स्कूल की बागडोर कॉलेज प्रबंधन ने एक अति अनुभवी एवं कुशल व्यक्ति "एस. पाठक" के हाथ में प्रदान की गयी है। श्री एस0 पाठक (डॉ0 जोशी)को अपना आदर्श मानते हैंतथा अपना शैक्षिक गुरू तथा राजनैतिक गुरू मानते है। उनका कहना है कि पठन पाठन की उनकी सोच एवं कर्ति "डॉ0 जोशी" जैसे प्रखर विद्वान को देखते रहने से हुई है। वह ईश्वर से प्रार्थना करते है कि पूर्ण सम्पूर्ण भाव से "डॉ0 जोशी" को अपनी प्रेरणा स्रोत मानते हुए शिक्षा जगत की चुनौती पूर्ण नया कार्य करते रहें। डॉ0 जोशी के मंत्री मद पर रहने की वजह से उनके सपने आदर्श विद्यालयों की स्थापना को आगे बढ़ाना एवं एक सकारात्मक स्वरूप देना उद्देश्य है। श्री पाठक विशप जानसन स्कूल के प्रधानाचार्य जी एन.एल. सिंह एवं माननीय विशप श्री ए. आर.स्टीफेन्सन विशप ऑफ यू0पी0 को भी प्रेरणा का स्वरूप मानते हैं।

J.M.SCHOOL AND COLLEGE

(Affiliated with I.C.S.E., New Delhi)

Co-Education

Registration open for Admission Nursery to XI

Under Academic Control of Bishop George School and College
Special Teaching Arrangement for Nursery Group/Separate Block

Subjects Nursery to 12th

Cont.

Near Arail Chauraha (Jahangir Crossing), Naini, Allahabad
☎: 2696304, Mo: 9415216857

S.Pathak
Principal

कैथेड्रल गर्ल्स हाईस्कूल

कैथेड्रल पब्लिक स्कूल

(इंग्लिश मीडियम)

रॉयल गेस्ट हाउस

उद्घाटन 1 अगस्त 2003 सायं 5 बजे

सम्पर्क स्थलः

गौस नगर, करैली, इलाहाबाद

फोन 2657651 मो0ः

प्रबन्धक

मोईज अहमद

लोकप्रियता में अपना जवाब खुद थे 'छुन्नन गुरु'

0lqtkrk xqIrk

इलाहाबाद को इस बात का गर्व रहेगा कि यहॉ कल्याण चन्द्र मोहिले 'छुन्नन गुरु', सालिकराम जायसवाल, हेमवती नंदन बहुगुणा जैसे हर दिल अजीज जन प्रतिनिधि रहे हैं। छुन्नन गुरु ने अपने समकालीन राष्ट्रीय नेताओं के बीच जिस तरह अपनी अलग पहचान बनायी थी वह केवल उनके जैसे व्यक्ति के लिए ही संभव था। उनकी सहजता, निर्भीकता, निःस्वार्थ सेवा भावना के कारण उन्हें जीवन काल में ही वह दर्जा मिल गया था जो बिरले को ही नसीब होता है।

छुन्नन गुरु के पिता का नाम कन्हैयालाल मोहिले उर्फ सटल्लू महराज था। वे खत्रियों के पुरोहित थे। लोकनाथ से खेमामाई के मन्दिर की ओर जाने वाले रास्ते पर मन्दिर से थोड़ा पहले बायीं ओर 485 अहियापुर में (अब 566–567 मालवीय नगर) उनका मकान था। यह मकान उन्हें एक खत्री रईस ने पुरोहिती में दिया था। छुन्नन गुरु के दो और भाई थे–कालिका प्रसाद मोहिले उर्फ मुन्नन गुरु तथा कमला प्रसाद मोहिले उर्फ कुन्नन गुरु। तीनों भाइयों ने सी0ए0वी0 कालेज, जो पहले स्कूल था, में शिक्षा पायी। छुन्नन गुरु कक्षा छह और कुन्नन गुरु कक्षा तीन तक ही पढ़ पाये। मुन्नन गुरु के दो पुत्र पूरन चन्द्र तथा विमलचन्द्र अभी हैं। पहले रेलवे तथा दूसरे रोडवेज से रिटायर हो चुके हैं। उनके एक पुत्र पन्नालाल मोहिले रेलवे में गार्ड थे, जिनका 1973 में निधन हो गया था।

छुन्नन गुरु संघर्षशील व्यक्ति थें। दूसरे का दुख दर्द वे आगे बढ़कर बॉटते पर अपने दुख की लोगों को भनक नहीं लगने देते थे। उन्होनें चौक में कपड़े की दलाली, खत्रियों की पुरोहिती तथा सायकिल मरम्मत की दुकान से अपना काम चलाया लेकिन कभी बड़े फायदे के चक्कर में नहीं रहे। अगस्त 1947 में वे भारत विभाजन का विरोध करते हुए जेल गये थे। भारत विभाजन के समर्थक राजगोपालचारी जब इलाहाबाद आये तो छुन्नन गुरु ने उन्हें काले झंडे दिखाये। लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रबल पक्षधर पंडित जवाहर लाल नेहरु की उपस्थिति में पुलिस ने जिस बेरहमी से छुन्नन गुरु और उनके साथियों की पिटाई की थी उससे उनके कपड़े तार–तार हो गये थे और शरीर लहूलुहान हो गया थां नेहरु जी ने बाद में इस घटना का जिक्र दिल्ली में पत्रकारों से किया किन्तु बेरहमी से की गयी पिटाई पर खेद व्यक्त नहीं किया था। छुन्नन गुरु एक बार नेहरु जी का विरोध करने के लिए दस हजार लोगों के साथ फूलपुर गये थे।

अगस्त, 1967 में अपने घर में सीढ़ियों से गिर जाने से छुन्नन गुरु की रीढ़ की हड्डी में गंभीर चोट आयी। उन्हें बेली अस्पताल में भर्ती किया गया। वे ठीक भी हो गये थे परन्तु 14 अक्टूबर को उनके मस्तिष्क की शिरायें फट जाने के कारण उनका निधन हो गया। सारा नगर शोक में डूब गया। उनकी शव –यात्रा में हर वर्ग के लोग शामिल हुये, जो उनकी असीम लोकप्रियता का प्रतीक था।

छुन्नन गुरु इलाहाबाद केनिंग कपनी, रोडवेज समेत तमाम श्रमिक संगठनों से जुड़े थे। वे बुजुर्गो की आशा का केन्द्र तथा नौजवानों के सरपरस्त थे। मुँह में पान, घनी मूछे, हाथ में सोटा तथा चेहरे पर सहज मुस्कान लिये वे हमेशा जन–सेवा के लिए तत्पर रहते थे। इलाहाबाद में मेडिकल कालेज, इंजीनियरिंग कालेज की स्थापना की मांग उन्होनें सबसे पहले की थीं। वे लोकनाथ व्यायामशाला के संस्थापक थे। कल्याणी देवी में हनुमान मंदिर (कल्याण गढ़) की स्थापना उन्होंने ही करायी थी। पजावा रामलीला कमेटी के वे आजीवन मंत्री रहें। जब नगर में वर्षो रामलीला नहीं हुई तो उसे फिर से शुरु करने के लिए आन्दोलन चलाने वालों मे वे भी थे।

छुन्नन गुरु के परम मित्रों में जगन काका, मुन्नू लाल केसरवानी, बब्बू खत्री, मूलचन्द्र मालवीय, गुलाब मालवीय, श्रीराम मेहरोत्रा, महादेव कुशवाहा, रामकिशोर खन्ना, प्रेमचन्द्र अग्रवाल थे। वे रविवार व्रत रखते और उस दिन वे कहीं भी होते तो भी गंगा स्नान के लिए जरुर जाते। इस अवसर पर जगन लाल सर्राफ तथा गुलाब मालवीय उनके साथ रहते। चुनावों में मुसलमानों का एक बड़ा वर्ग उन्हें हमेशा कांग्रेस के खिलाफ मदद करता था और वे भी उनकी इस मैत्री का मान रखते थे।

छुन्नन गुरु प्रातः 6 बजे उठते। हुक्का पीने के बाद वे अपने घर के नीचे के कमरे में बैठकर 10–11 बजे तक लोगो से मिलते। उसके बाद खा–पीकर लोगों के काम के लिए घर से निकलते। दो–तीन बजे घर से लौटते और शाम को एक बार फिर जनसंपर्क के लिए निकल जाते। चौक में चुन्नूलाल पंसारी, बहादुरगंज में राजाराम लोहेवाले तथा जीरोरोड

vko';d lwpuk

nksLrksa ls fuosnu gS fd fo'o Lusg lekt ds lnL; cuus ds bPNqd O;fDr bl i=dk ds vkthou lnL; cu ldrs gSa A

में पारसनाथ त्रिपाठी की दुकान पर उनकी प्रायः हर दिन बैठकी होती। गुरु घर पर न मिलते तो लोग उनके अडडों पर मिल लेते थे।

छुन्नन गुरु वक्त के पांवद थे। गुरुता और बचपने का उनमेंअद्भुत मिश्रण था। वालीबाल का मैच देखने, दंगल देखने, होली खेलने में, जुलूस में, सभा में, फोटो खिंचाने में, मोटर में बैठने में, किसी के यहॉ विवाह या गमी मेंपहुॅचने वालोंमेंसे वे सबसे पहले होते थे। वे नाराज होते थेपर उनका गुस्सा थोड़ी ही देर मे कपूर ही तरह उड़ जाता था। उनकी बैठक मेंमिट्टी का एक बूढ़ा और बुढ़िया थी, वे खाली समय में स्प्रिंग पर टिके उनके सिर को हिलाकर बच्चोंकी तरह हॅंसते थे। एक बार वे मई–जून की गर्मी मेंअपने कमरे मेंविश्राम कर रहे थेतभी मदद मांगने आये किसी आदमी ने दरवाजे की कुंडी खटखटायी। गुरु थोड़ी देर पहले ही आये थे अतः उनके भतीजे ने उससे कहा तुम जाओ गुरु सो रहे हैं। वह जाने लगा। गुरु को किसी के आने का आभास हुआ। वह आदमी लगभग सौ मीटर चला गया था। गुरु ने भतीजे को दौड़कर उसे बुलवाया और उसकी बात सुनी। इस तरह गुरु अपना जबाव खुद थे।

मेरे इस गुलशन में है खार कौन जरा मालूम करो

बेचन लाल विनोदी

nssk dsdWWokjisigSrS,kjdkSutjkekywedjksAA
rgjhdtksp yrhgSlcdseqRrfgngksusdh]
,drkdhvkMesagSbfUrkjdkSutjkekywedjksAA1AA
?kjlsfudyrsgq,D;ksangytkrkgSfny]
D;ksangkrgSljsdktkjdkSutjkekywedjksAA2AA
ekkweksadksHkhltk,avktvkegksxbZ
ftudk[kwu&,&ftxjgSfxj¶rkjdkSutjkekywedjksAA3AA
ftlns'kesafp'rh]ukud]xkSrevk;s]
vktoghrkLlqcdkgSHkaMkjdkSutjkekywedjksAA4AA
cnuketksdjrsgSafdlh,dfxjksgdksges'kk]
;sfrexjgSa/kqWvk/kkjdkSutjkekywedjksAA5AA
ikdkWcudjesjsns'kdks[kkxbZnhed]
blnkSjesagSgyQnkjdkSutjkekywedjksAA6AA
ns'kdsgjtjsZesafeykgS[kwugekjk]
nq'eudsfy,gSryokjdkSutjkekywedjksAA7AA
eqYddhgkyriscsrgkkkjksiMksxs^^kfdc^^
dkSugSokjkgSxqugxkjdkSutjkekywedjksAA8AA

शीघ्र प्रकाश्य शीघ्र प्रकाश्य शीघ्र प्रकाश्य

सुप्रभात

कवि एवं उनकी कविताएं (भाग 1)

नवोदित कवियों का सचित्र परिचय सहित उनकी कविताओं का अनूठा संकलन सहयोगी आधार पर प्रकाशित किया जा रहा है जो कई खण्डों में छपेगा। इसी प्रकार कहानी एवं लघुकथाओं का भी अलग–अलग संग्रह छपेगा। कृपया अपनी रचनाएं हमें निम्न पते भेंजे अथवा सम्पर्क करें।

मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज',
एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी,
मुण्डेरा, इलाहाबाद

अथवा

एम.टेक. कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर,
~~धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा (झलवा)~~
इलाहाबाद, मो0 : 3155949

धारावाहिक उपन्यास

दिल का पैगाम

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

अब तक आपने पढ़ा–

बारहवीं किस्त

0 अनिल व सावन बहुत ही घनिष्ठ मित्र है। अनिल की दोस्ती साथ पढ़ने वाली, लड़की अनु से होती है, तीनों कम्प्यूटर कोर्स करते है। अनिल और अनु की दोस्ती प्रेम का रुप ले लेती है, परन्तु एक–दूसरे का पता मालुम न होने के कारण दूरियां बन जाती है।

0 सावन परीक्षा में अच्छे अंको से पास हो जाता है। मनोज पाण्डेय अनु के पिता से मिलते है तथा अपनी प्रेम कहानी और शादी के बारे में बताते हैं।

0 शालू, सावन को उसके जन्म दिन पर ताजमहल प्रजेन्ट करती है। जिस पर लिखा होता है–आपके कदमों के साये को माने को इन्तजार करती शालू द्वारा सप्रेम भेंट। अनिल–अनुराधा तथा सावन और मोना कोर्ट मैरिज करते है। इसमें सावन के पत्र–मित्र मि0 अग्निहोत्री उसकी मदद करते हैं। सावन, अनिल और अनुराधा को अपने मित्र के पास बाहर भेज देता हैं। देर होने के कारण मोना को मि0/मिसेज अग्निहोत्री छोड़ने उसके घर जाते है। **और अब आगे....**

अनिल के घर सावन के सभी दोस्त अनिल और सावन का इन्तजार कर रहे होते हैं। सभी लोग चिंतित हैं कि वे दोनों क्यों नही आए। सावन 9 बजे रात्रि पहुँचता है। वह अनिल के बारे में बताता है।

"रास्तें में पोस्टमैंन मिल गया था। उसमें अनिल का एक ज्वाइनिंग लेटर था। ज्वाइन करने की आज की अंतिम तारीख थी और समय बहुत ही कम था। मैंने ही उसे दबाब डालकर भेज दिया। मेरे पास कुछ पैसे थे, मैंने उसे दे दिया। वहाँ से वह जल्दी ही खत लिखेगा।"

"कम से कम फोन तो कर दिये होते, बेटा। तुम हमेशा उसके लिए दौड़ते रहते हो। आज तुम्हारें जन्मदिन की पार्टी है।" अनिल की मम्मी कहती हैं।

"आंटी, आरक्षण और भ्रष्टाचार ने आजकल वैसे ही हम युवाओं की कमर तोड़ दी है। उस भी अगर मौका मिले तो कैसे छोड़ दिया जाए। बर्थ डे तो हर साल आता है और चला जाता है।"

उसी बीच अनिल के पापा मि0 डी0एन0सिंह आते हैं और कहते है–"अरे मैडम साहिबा, सावन का बाहर इंतजार हो रहा है, उसे तैयार होने दो कि बस पूछती रहोगी। दुबारा मौका मिलेगा।"

> ☞आंटी, आरक्षण और भ्रष्टाचार ने आजकल वैसे ही हम युवाओं की कमर तोड़ दी है। उस भी अगर मौका मिले तो कैसे छोड़ दिया जाए। बर्थ डे तो हर साल आता है और चला जाता है।
>
> ☞सावन, सच–सच बताओ, आज इतनी देर क्यों हो गयी? अनिल कहाँ गया है?
>
> ☞हाँ सावन! मैं भी अपने मेडिकल के एक साथी से प्यार करती थी। हम दोनों एक दूसरे को बहुत चाहते थे। मैं आज जो कुछ भी हूं अपने उस प्रेमी की बदौलत ही हूं। उसकी प्रेरणा ने ही हमें आज इस मुकाम पर पहुँचाया है।"

सावन फ्रेंश होकर केक काटता है। प्रोग्राम प्रारम्भ होता है तभी अनिल की भाभी और डॉ0 रेखा सावन से कहती है–"सावन तुम तो गाना अच्छा गाते हो, गिटार भी बजा लेते हो। तुम आज एक गाना गाओ, हम लोग तबले और कैसियों पर तुम्हारा साथ देंगें।"

सभी लोग सावन को गाने के लिए जोड़ डालते हैं–"हाँ सावन, हाँ। सुनाओं। आज खुशी का मौका है।"

सावन गाता है–

जिंदगी की यही रीत है,
हार के बाद ही जीत है।
जिंदगी रात भी, उजाला भी है जिन्दगी
थोड़ा गम हैं; थोड़ी है खुशी......ला....ला।

तालियों से गड़गड़ाहट से माहौल गूंज उठता है।

"वाह बेटे, सावन। वाह! वेरी गुड! तुम तो छूपे रूस्तम निकले। तुमने मेरी पंसद का गाना गाया।"

"थैंक यू अंकल।"

कुछ लोग डांस करते है। डिनर होता है और पार्टी समाप्त हो जाती है। डॉ0 रेखा सावन को बुलाती है–"सावन, सच–सच बताओ, आज इतनी देर क्यों हो गयी? अनिल कहाँ गया है?"

"वहीं, जहाँ मैंने आंटी को बताया।"

"नहीं, सावन। तुम झूठ बोल रहे हो।" (उन्हें कुछ रिर्पोट अशोक शुक्ला से पहले ही मिल चुकी होती है। वह सावन को कुछ हींट देती है।)

सावन अनिल के बारे में बताता है।

"अरे सावन, तुम इतने बुद्धिमान हो। माना भाई तुम रियल लाइफ में भी एक कलाकार

से कम नहीं हो। तुम इतनी कम उम्र में इतना कुछ करवा दिये और किसी को असलियत की भनक भी नहीं। तुम्हारी जुबान तो सच नही बोली, लेकिन चेहरा भी नहीं बोला। वास्तव में तुम्हारे जैसा ही दोस्त होना चाहिए। काश! तुम मेरे अपने सगे भाई होते तो मैं भी अपने प्यार को पा ली होती।"

"क्यों क्या हुआ दीदी। आप अचानक उदास क्यों हो गयी?"

"हॉ सावन! मैं भी अपने मेडिकल के एक साथी से प्यार करती थी। हम दोनों एक दूसरे को बहुत चाहते थे। मैं आज जो कुछ भी हूं अपने उस प्रेमी की बदौलत ही हूं। उसकी प्रेरणा ने ही हमें आज इस मुकाम पर पहुँचाया है।"

"तो दीदी, आपने उनसे शादी क्यों नही की।"

"वह एक बहुत ही बड़े परिवार से ताल्लुक रखते थे। किन्तु उनके ऊपर उस बड़क्पन का कोई साया नहीं था। उनके पिताजी शादी के एवज में एक मुश्त रकम चाहते थे और मुझे नौकरी करने की मनाही। जो न मुझे मंजूर था न उनको। उनेक सामने एक मजबूरी यह थी कि वह अपने पिता के सामने मुँह खोलकर बात भी नहीं कर पाते। वह उनकी प्रत्येक आज्ञाओं को शिरोधार्य कर लेते, चाहे वह गलत ही क्यों न हो। शायद कुछ पल के लिए ठुकरा भी देती किन्तु दहेज की इतनी बड़ी रकम देना मेरे पिताजी के बलबूते की बात न थी क्योंकि मुझसे छोटी तीन बहनें और भाइयों को पढ़ाना भी था। जब वह कुछ दिनों के बाहर गये तो उनके पिताजी ने उनकी शादी एक बड़े परिवार में तय कर दी। जब वह लौटकर आये तो शादी की सारी तैयारियां पूरी हो चुकी थीं।और शादी के दिन में मात्रा चौबिस घंटे का समय शेष बाकी था। मैं उनसे मिल भी न सकी। उनकी शादी भी हो गयी। मैंने अपने दिल को पत्थर बना लिया। तभी मेरी शादी तुम्हारे जीजाजी से तय हो गयी। इनके प्यार और चाहत ने काफी हद तक हमारे घाव पर मरहम लगाया। लेकिन जब भी अकेली होती या किसी प्रेमियों की जोड़ी को देखती या सुनती तो घाव पुनः हरे हो जाते। अब

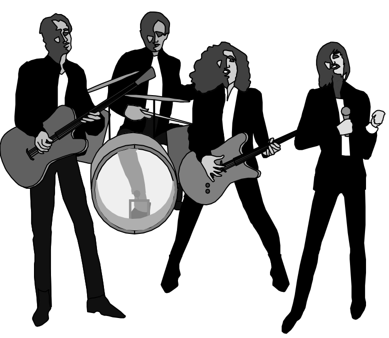

दिल की संतुष्टि प्रेमियों की सहायता करके करती हूँ। अगर मेरी जानकारी में किसी लड़की की शादी उसके प्रेमी से पैसे के कारण रूकने को होती है, तों मैं खबर लगते ही उसे अपनी यथाशक्ति पैसे का सहयोग करती हूं। इस दहेज रूपी दानव को मिटाने के लिए तुम्हारे जैसे हरियाली की जरूरत है। सावन तुम इस दहेज रूपी दानव का संहार करने का बीड़ा उठाओं मैं तुम्हारें साथ हूं। इसका एक विकल्प प्रेम–विवाह का बढ़ावा भी हो सकता है। इसके लिए मैं और तुम्हारे जीजाजी हर–पल, हर–तरह से तुम्हारे साथ है। मैं तो भगवान से यही प्रार्थना करूँगी कि भगवान तुम्हारे जैसा भाई अगले जनम में मुझे दे। मैं तुम्हारे जैसे भाई को पाकर सारी दुनिया को भूल जाऊँगी।"

"क्या आप मुझे अपना भाई नहीं मानतीं। क्या मैं आपके सगे भाई जैसा नहीं हूँ?"

"नहीं सावन! ऐसी बात नहीं हैं? तुमसे मिलकर तो मैं यह भी भूल गयी हूँ कि मेरा कोई और भाई भी है। किन्तु तुमने भाई बनने में इतनी देर क्यों कर दी? अगर देर न होती तो तुम कृष्ण और मैं सुभद्रा होती। खैर अब छोड़ों आगे स्थिति कैसे संभालोगे। हमारे लायक कोई मदद होगी तो ....।"

"सबसे बड़ी मदद आपका हमारे विचारों

ग़ज़ल

अपना ग़म दिल के पास रहने दो
मुझको यूँ ही उदास रहने दे
नंग-ए-तहज़ीब तो न बन इतना
कुछ तो तन पर लिबास रहने दे।
ग़म का सूरज भी डूब जायेगा
दिल में इतनी सी आस रहने दें
दौलत-ए-रंज-ओ-ग़म न छीन ऐ दोस्त
कुछ ग़रीबों के पास रहने दे।
ऐ इमारत के तोड़ने वाले
सिर्फ़ मेरा क्लास रहने दे
कर दे सारी खुशी अता उनको
और ग़म मेरे पास रहने दे
फिर तो दूरी नसीब में होगी
और कुछ देर पास रहने दे

अतीक़ इलाहाबादी

बेसन नान खटाई

lkexzh% cslu 1 di] 2 di phuh ikmMj] Ms<+ di eSnk] 1Vh,lih ouhyk ,lsal] vk/kk di lwth] 6&7 VqdM+s ckpsjh] 3@4 di ?kh] pqVdh Hkj uedA

fof/k% ,d crZu esa phuh vkSj ?kh dks Øhe cuk;saA Øhe ds gYdk gksus rd QsaVsA 15 ls 20 feuV rd cslu] eSnk vkSj lwth dks ,d lkFk feykdj Øhe esa feyk,A pqVdh Hkj uedMky saA vkSj xje gksus rd xwW/ksA fQj ,lsal feyk;saA vkSj NksVh&2 yksbZ cukdj fcfLdV dk vkdkj nsaA vkSj fpdus crZu esa 1 bap dh nwjh ij j[kdj igys ls xje vksiu esa j[knsaA 15 ls 20 feuV rd lquqjk Hkjk gksus rd csd djsaA bls fudky dj BaMk djsa fQj ,vj VkbV fMCcs eas j[ksaA

चाकलेट बिस्किट

lkexzh% vk/kk pEep ?kh] pqVdh Hkj ued] 1 di phuh] 1 cWwh ,lsal] 2 di eSnk] vk/kk pEep csafdx ikmMj] nks pEep dLVMZ ikmMj] 2 pEep pkdysV ikmMj] psjhA

fof/k% ?kh vkSj phuh dks 15 feuV rd QsaVysA fQj mlesa eSnk ds lkFk csafdx ikmMj feykdj pky ysA phuh vkSj ?kh Øhe ds lkFk ued feykdj dLVMZ ikmMj feyk,aA vc mlesa eSnk Mkydj uje gksus rd xwa/ksA ,lsal feyk,aA vc blds nks NksVk vkSj ,d cM+k yksbZ cuk;saA NksVk dk yk nksuksa yksbZ ysdj ,d lkFk feykdj rhu cuk;saA vc cM+k dk yk yksbZ ysdj mlesa dksdks ikmMj] pkdy ikmMJ feykdj vPNs ls xwa/ksA vc blesa nks yksbZ cuk;saA vc ,d lQsn yksbZ ysdj yEck lk csy ysaA ,d fpdus IysV esa ?kh yxkdj mlij jksVh dks

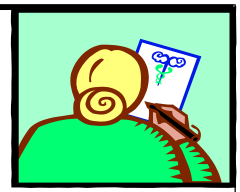

Jherh t;k xksdby

lapkfyd] Lusg ka xudy kcsUnz

j[ksaA vc j[ks jksVh ij Åij ls nwljh jksVh Hkwjh ckyh j [krhft,A blh rjg rhljh lQsn jksVh Hkh j[knsaA jksy cuk;sA bls 2 bap yEckbZ vkSj vk/kk bap pkSM+kbZ esa dkV ysaA vc fpdus crZu esa vk/kk bap dh nwjh ij j[kdj csd djsaA le; 20 ls 25 feuV rdA

vko';d lwpuk

vxj vki fdpsu laca/kh dksbZ iz'u iwNuk pkgrh gS;k fdlh fo'ks"k O;atu ds ckjs esa tkuuk pkgrh gSrks gesa vo';fy[ksa& Lusg fdpsu] }kjk ekfld if=dk fo'o Lusg lekt],y&vkbZ&th&93] uhe ljk;Wd kWyksuh]eq.Msjk] bykgkckn

से सहमत होना ही है। आप हमारी समर्थक हैं ये क्या कम हैं। यह हमारे लिए बहुत बड़े सौभाग्य की बात है कि आप जैसी बुद्धिजीवी महिला महिला का सहयोग मिलेगा। समय आने पर आपसे अवश्य मिलुँगा।"

"अरे सावन! ये तो बताओ कि क्या इस सावन की भी कोई हरियाली है क्या? या तुम्हारे लिए भगवान को अलग से निर्माण करना पड़ेगा।"

सावन अपनी बात को गुप्त रखना चाहता है–"दीदी, अभी हरियाली की जरूरत नहीं है। हो सकता है हरियाली मेरे जीवन को मरुस्थल बना दें। इसलिए अभी अपनी हरियाली नहीं खोज रहा हूँ। जब लक्ष्य तक पहुँच जाऊँगा तो मरूस्थल बनने पर भी गम नहीं रहेगा। आजकल शादी के बाद हरियाली कम, मरूस्थल अधिक मिलता है।"

"अरे, सावन। औरतों से इतना मत डरो। तुम्हें हरियाली ही मिलेगीं। इतने लोगों की दुआएं जो तुम्हारे साथ है।"

"दीदी! इस समय रात्रि के तीन बज रहे हैं। अब सोया जाए। डू नॉट फील बैड, टुडे होल डे आई रन अप। सो आई एम कम्प्लीटली टायर्ड। "

"ओ.के.! नथिंग टु मेन्शन। यू स्लीप, गुड नाइट।"

सावन वहीं सोफें पर सो जाता है। उसे भीतर तक जाने ही हिम्मत न थी।

....

दूसरे दिन सुबह नाश्ता करने के बाद सावन अनिल की मम्मी को बातों में बहलाकर उनसे अनिल की शादी के बारें में जानने का प्रयास करता है। जब वह पूर्णतया उसकी बातों में आ जाती है तो कहता है–"आंटी, एक बात कहूं। ना तो नहीं करेंगी।"

"नहीं, बेटे, तेरी बात को मैं, नहीं। नहीं कर पाउँगी। तू बोल के तो देख। क्या काम है? जल्दी बोल बेटे।"

"आंटी पहले पक्का वादा कीजिए।"

"चलो वादा।"

"आंटी, अब तो अनिल की सर्विस भी लग गयी है। अब एक और भाभी लाओ न। आपकों भी आराम हो जाएगा। वैसे भी बड़ी भाभी लोग बाहर ही रहती हैं और इधर दो साल से किसी दोस्त की शादी भी नहीं हुई। बरात करने को बहुत मूड कर रहा है।"

"ठीक है बेटा, तू उसके लायक कोई प्यारी, अच्छी सी लड़की देख। मैं तैयार हूँ।"

सावन अभी इतना ही चाह रहा था।

लोक आयुक्त उत्तर प्रदेश के अधिकार एवं कार्य प्रणाली

लोक आयुक्त उत्तर प्रदेश के लोकसेवकों के कुप्रशासन एवं भ्रष्टाचार के विरूद्ध जनता की शिकायत सुनने तथा उनका निवारण करने हेतु शासन को अपनी संस्तुति प्रस्तुत करना और कोई भी व्यक्ति उत्तर प्रदेश सरकार के किसी लोकसेवक के कुप्रशासन, पद के दुरूपयोग, भ्रष्टाचार, वित्तीय अनियमितता आदि के विरूद्ध लोक आयुक्त को शिकायत भेज सकता है। लोक आयुक्त को यह अधिकार है कि यदि परिवादी द्वारा यह समाधान किया जाता है कि निर्धारित अवधि के भीतर शिकायत प्रस्तुत न करने के लिए उसके पास पर्याप्त कारण है तो परिवाद ग्रहण किया जा सकता है। '' अभिकथन का तात्पर्य किसी लोक सेवक के भ्रष्टाचार अथवा सत्यनिष्ठा की कमी को लोक आयुक्त के संज्ञान में लाने से है। ''शिकायत'' व्यथित व्यक्ति द्वारा की जा सकती है जबकि ''अभिकथन'' ''लोकसेवक'' से भिन्न किसी अन्य व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है। निम्नलिखित व्यक्ति व विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी लोक सेवक की परिभाषा में आते है और उनके खिलाफ शिकायत या अभिकथन भेजे जा सकते है– ''लोक सेवक'': प्रत्येक व्यक्ति जो नीचे वर्णित रूप में है या कभी रहा है लोकसेवक की श्रेणी में आते हैं। (1) उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री को छोड़कर प्रत्येक मंत्री, विधानसभा एवं विधान परिषद् का सदस्य, (2) शासन के सभी अधिकारीगण, कर्मचारीगण (जिसमें राज्य सरकार क अधीन तत्समय कार्यरत् अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारीगण सम्मिलित है।) निम्नलिखित के विरूद्ध केवल अभिकथन ही हो सकता है– (3) प्रत्येक क्षेत्र समिती के प्रमुख, जिला परिषद के अध्यक्ष, प्रत्येक नगर महापालिका का नगर प्रमुख, यू.पी. म्यूनिसिपेलिटीज एक्ट 1916 की धारा 2 के खण्ड (4) में यथापरिभाषित किसी सिटी की नगरपालिका का प्रत्येक प्रेसीडेन्ट्रीकृत किसी जिला स्तर की केन्द्रीय समिति अथवा किसी शीर्ष समिति का कोई अशासकीय सभपति (जिसके अन्तर्गत उक्त विवरण का प्रत्येक पदाधिकारी भी, चाहे उसे किसी भी नाम से पुकारा जाये) या प्रबन्ध निदेशक। प्रत्येक ऐसा व्यक्ति, जो निम्नलिखित की सेवा में है या उसका वेतनभोगी है इनके विरूद्ध केवल अभिकथन हो सकता है– (4) क उत्तर प्रदेश रराज्य में कोई भी स्थानीय प्राधिकारी जिसे राज्य सरकार द्वारा गजट में तदर्थ अधिसूचित किया जाये। ख– समय समय पर शासन द्धाराय अधिसूचित अन्य विशिष्ट सरकारी कम्पनियों नगर निगमों परिषदों आदि को भी लोक आयुक्त के क्षेत्राधिकारी में लाया गया है। प्रत्येक ऐसा व्यक्ति जो उक्त कम्पनियों, निगमों परिषदों में वेतनभोगी हो, के खिलाफ अन्वेषण का अधिकार दिया गया हैं। इस संगठन के समक्ष निम्नलिखित शिकायतें भी की जा सकती है– लोकसेवकों की पेंशन, अनुग्रह राशि, भविष्य निधि, सेवानिवृत्ति सम्बन्धी देयक, निष्कासन अथवा सेवा समापन से प्रोदभूत कोई दावा। उत्तर प्रदेश लोक आयुक्त अधिनियम में यह स्पष्ट प्राविधान है कि निम्न पदाधिकारियों के बारे में कोई जॉच नही की जायेगी। 1. उच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधिपति या किसी न्यायाधीश या न्यायिक सेवा के किसी सदस्य। 2. किसी भी न्यायालय के अधिकारी या सेवक। 3. महालेखाकार, उत्तर प्रेदेश। 4. उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष, सदस्य या कर्मचारी वर्ग। 5. मुख्य निर्वाचन आयुक्त, निर्वाचन आयुक्त, प्रादेशिक आयुक्त तथा मुख्य निवार्चन अधिकारी, उत्तर प्रदेश। 6. प्रदेश के विधान मण्डल के सचिवालय के कोई कर्मचारी । निम्न मामलों में शिकायत नही की जा सकती– 1. किसी अपराध की जॉच–पड़ताल का कार्य। 2. राज्यय की सुरक्षाय हेतु किया गया कार्य। 3. कोई मामला न्यायालय में जायेगा या अभियोग जारी किया जायेगा, इस सम्बन्ध में निर्णय लेने का कार्य। 4. किसी संविदायी अधिकार को पूरा करने में परेशानी अथवा घोर विलम्ब के मामले को छोड़कर शासन स्थानीय प्राधिकारी, निगम, सोसाइटी, कम्पनी आदि द्धारा वाणिज्यिक समितियों से की गयी संविदा। 5. लोक सेवकों की नियुक्ति, निष्कासन, वेतन, अनुशासन, अधिवार्षिकी या सेवा शर्तो से सम्बन्धित मामले 6. सम्मान तथा पारितोषित प्राप्त करने के मामलें।

जॉच का कार्यः – जॉच का कार्य उत्यन्त गोपनीयय तरीके से कियाय जाता हैं। इसके लिए लोक आयंक्त के अन्तर्गत एक स्वतंत्र अन्वेषण इकाई की स्थापना की गयी हैं।

शिकायतें कैसे करें: प्रत्येक परिवाद जहॉ तक सम्भव हो टंकित होना चाहिये तथा प्रत्येक परिवाद के साथ आरोपों के सम्बन्ध में स्पष्ट विवरण (दिनांक, समय, स्थान, सम्बन्धित व्यक्ति के नाम इत्यादि), अभिलेख तथा साक्ष्य के शपथय पत्र साफ–साफ होना चाहिये। 5. अभिकथन रूपी परिवाद के लिए 1,000/– य. प्रतिभूति की धनराशि से सम्बन्धित ट्रेजरी चालान संलग्न होना चाहिये इसे निर्धारित शीर्षक '' 8443–सिविल निक्षेप'' के अन्तर्गत भारतीय स्टेट बैंक अथवा कोषागार में जमा करना चाहिये। 6. शपथ में लोकसेवक के विरूद्ध आरोपों का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिये। 7. पुलिस की अभिरक्षा कारागार या पागलखाने में किसी व्यक्ति द्वारा लोक आयुक्त को लिखित वत्र को बिना किसी व्यक्ति द्वारा लोक आयुक्त को लिखित पत्र को बिना किसी औपचारिकता की पूर्ति के ग्रहण किया जा सकता है परन्तु उस पर कार्यवाही तब की जायेगी जब उसकी औपचारिकता पूर्ण करा ली जायेगी। ''शिकायत'', ''अभिकथन'' सम्बन्धी निर्धारित प्रपत्र में लोक आयुक्त को तीन प्रतियों में भेजना होगा। प्रप्त्र एवं अन्य जानकारी कार्यालय लोक आयुक्त, उत्तर प्रदेश, बी–1/124, विश्वास खण्ड–1, गोमती नगर, लखनऊ से प्राप्त की जा सकती है।

xqIr jksxrkdrtokuh

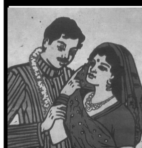

xqIr jksxksads 'kfrZ;kbZykt gsrqvkt ghfeysa

सेक्स या शुक्राणु समस्या ग्रसित रोगियों का निदान सम्भव

नोटः ध्यान रहे, सही समय पर सही प्रयास और उचित इलाज ही रोगी को ठीक कर सकता है, गारण्टी नहीं। बल्कि सफल इलाज करवाकर रोग को जड़ से समाप्त करें।

मिलने का समयः

प्रातः 9 बजे से रात्रि 8बजे तक, रविवार को प्रातः 9 बजे से 2 बजे तक।

नोट : उत्तर भारत में हमारी कोई शाखा नहीं है।

हमारे यहॉ आधुनिक तरीके से तैयार युनानी + आयुर्वेदिक पद्धति द्वारा सरल एवं सफल इलाज करवा के हर मौसम में बगैर किसी नुकसान के लाखों निराश रोगी नया जीवन पा चुके हैं। हमारे इलाज के तरीके का लोहा सर्वश्रेष्ठ गुप्त रोग विशेषज्ञ भी मानते है।

आखिर गुप्त रोग है क्या? जिसे घर वालों से गुप्त, पास–पड़ोस से गुप्त मित्रों से गुप्त, यहॉ तक कि पत्नी से भी गुप्त रखा जाये, क्या गुप्त रोग कोई समस्या है? क्या गुप्त रोग छुआछूत है? या फिर गुप्त रोग भूत–प्रेत है? अगर आप में से आपके जानने वालों में से परेशान है तो कृपया कोई भी ऐसा सुझाव न दें, जिससे रोगी घबराहट या परेशान होकर आजकल के लुभावनें प्रचारों जैसे गारण्टी और चन्द दिनों के अन्दर ठीक करने का दावा करने जैसे प्रचारों पर ध्यान देने लग जाये और बाद में अपना पूरा जीवन अं धेरे में बिताने पर मजबूर हो जायें। ऐसे रोगियों के लिए **"न्यू हेल्थ क्लीनिक"** के प्रसिद्ध विशेषज्ञ डॉक्टर का मशवरा है कि यदि आप नपुंसकता, शीघ्र पतन, स्वप्नदोष, धातु रोग, पेशाब में जलन सुस्ती, कमद दर्द, पेट रोग, गर्मी सुजाक जैसे आदि रोगों का शिकार हो चुके हों और जगह–जगह इलाज के बाद भी सफलता न मिली हो तो आज ही **"न्यू हेल्थ क्लीनिक"** में आकर **डॉक्टर एम.आर.शाही** गवर्नमेंन्ट रजिस्टर्ड सेक्स स्पेशलिस्ट से मिलकर सरल एवं सफल इलाज करवाकर वैवाहिक जीवन का भरपूर लाभ उठायें।

न्यू हेल्थ क्लीनिक

lsUVª ykgksVy fcfYMax ¼Mk0 >kdsBhd lkeus½ ?kaVk?kj pkSjkgk] bykgkckn

स्वप्न-मूल्य

मेरी हालत पर तरस खाओं राजू। मुझे इस हाल मे छोड़कर कहीं मत जाओ, अन्यथा मेरी तकरीर पर ओले बरस जायगें, मै आसमान से गिरती बूंद की तरह बिखर जाँउगीं, टूटकर धारती की प्यासी धूल में विलीन हो जाउगीं। मैं तुम्हारें चरणों की वंदना करती हूँ। तुम्हारे स्नेह की पूजा की पूजा और तुम्हारे प्यारे की आराधना ....''

सब करो ममता हृदय पर काबू रखो, धैर्य धारण करो, मै तुम्हे छोड़कर कहीं नही जाउँगा। भला तुम्हारा प्यार कही जाने भी कैसे देगा। मेरी आँखों मे जरा झाककर तो देखो....." ममता के हृदय में यह बात गुदगुदी सी छोड़ गयी। सिर उठाकर वह राजु की तरफ देखने लगीं। कितना भोलापन है इनकी आखों में हाय टप अश्रुबिन्दु चू रहे थे, जैसे पतझड़ के मौसम मे वृक्षों से पीली पीली पत्तियाँ झर रही हों। दोनो की निगाहें मिल गयी दोनो एक दूसरे से सरमा गये, सीर नीचे किन्तु निगाहें एक दूसरे की भावनाओं पर टिकाए हुए।

राजु.....। माँ की कड़कती हुई आवाज आई।

क्या है मम्मी ....?

देखो बेटा यह रहा तुम्हारे सामानों का गट्ठर इसी मे एक चादर और एक कम्बल भी है। वक्त बेवक्त कहीं भी गाड़ी रूक सकती है और तुम्हे सोने आराम करने के लिए परेशानी हो सकती है। अतः तुम्हारी सुविधा के लिए यह व्यवस्था किये देती हूँ। ट्रेवलिगं बैग में तुम्हारे नाश्ते की व्यवस्था है जिसमे एक थाली, कटोरदान और नैपकीन भी रखा है ताकि जहाँ भी रहो सुख चैन से रहो जाते ही तो नौकरी लग नही जायेगी। भटकना तो पड़ेगा ही थोड़ा सलूकियत और अच्छे व्यवहार से आफिसरों से मिलना। वैसे तुम्हारे पिता जी तुम्हे बैठने नही देगें। व्यवस्था कुछ न कुछ जरूर करेंगें

मगर मम्मी ....." अभी मैने पिताजी को पत्र लिखा था तो उन्होने अगले पत्र के आने तक इन्तजार करने को कहा था। ऐसी जल्दी भी क्या है कुछ दिन तक इन्तजार कर लेते हैं।

अरे वो तो निरे बद्धू ठहरे। मुश्किल से इसे तैयार भी किया तो पत्र लिख दिया....... इन्तजार करो। भला इसे रोककर चारपाई तुड़वाने से क्या फायदा? बैठा बैठा उस कलमूही, नीच, अभागन से रोमाँस करता रहता है। क्या कहूँ इस कलंकिनी को.....। पैदा होते ही माँको चबा बैठी, जवान होते ही बाप को खा गयी। अब यह बेहया मेरा घर विनष्ट करने पर तुली है। घबराओ नही बच्ची, इसे यहाँ से जाने तो दो.. ...। तुम्हारा एक एक बाल नोच डालूँगी, तुम्हारे माँस के लोथड़े को गीध कौओ को खिला दूँगी, तुम्हारी हड्डियो तक का पता नही चलेगा। हरामजादी को प्यार सूझा था । इतनी भाग्यवान बनती थी तो 10–20 लाख दहेज में ले आती। समाज में हमारा नाम रोशन होता। अरे हमारा क्या बिगड़ा है? इसके जाते ही तुम्हे भून डालूँगी। न रहेगा बाँस और न बजेगा बाँसुरी। बेशर्म कहीं की? प्यार भी किया कोर्ट मैरिज भी...। जब तुम्हें अपने प्यार पर इतना ही भरोसा था तों ऐसे ही चली आती? निठल्लो के साथ कोर्ट मे नामांकन क्यो करवा आई?

माँ न जाने क्या क्या बड़बड़ाये चली जा रही थी, जिसे ममता और राजू कातर नेत्रो से स्तब्ध होकर सुने जा रहे।

ममता डर गई। वह भावनाओ से कमजोर थी। ऐसी हालत मे वह अपने को सम्हाल पाने की सामर्थ्य न रखती थी। कभी कभी वह आत्म नियंत्रण तक खो बैठती और स्वयं से प्रश्न करती – "जगन्नियन्ता, इस संसार की नरक यातना के लिये क्या मेरा ही जीवन मिला था? संसार के सारे इंसानियत के ढ़ेर ढोने के लिये

डा0 रमा शंकर शुक्ल "रसराज"

क्या केवल मेरा ही पुष्ट कन्धा मिला था। मुझे आपकी सृष्टी रचना की असम्भाव्य श्रृंखला को देखकर हँसी आती है।

राजू ममता की हरेक भावनाओ से परिचित था । वह माँ से कुछ सवालात जरूर करना चाहता था लेकिन भय की काली रेखा उसके सामने खिची होने से वह कुछ बोल न पाता। उसे अपने अनभिव्यक्तिकरण पर आत्मपीड़ा होती थी। दोनों के मन चकोर मौन वार्तालाप अवश्य करते....... ।

ममता अगर बादल में बूँद न होती तो क्या होता ?

"नैन चकोर प्यासे रह जाते" अश्रुविग लिप्त मुस्कान से ममता ने प्रत्युत्तर दिया।

"ममता, अगर गुलाब में काँटे न होते तो?"

"हमारा प्यार अधूरा रह जाता, हमारी भावनाएं विश्रंखिल हो जाती। हृदय का मर्मभेदी स्पन्दन रूक जाता, क्योंकि काँटो की चुभन से ही मन रोमाँचित होता है, पुलकित होता है। विस्मृत होती है वे यादगारे जो कभी कभी जिन्दगी मे कशिश पैदा करती है।" यदि भीषण ग्रीष्मातप में यह हरियाली न झुलसती तो क्या होता?

ममता वेदना की निस्सीन जड़ता मे खो चुकी थी। वह भविष्य मे आने वाले प्रत्येक दुर्दिनो की तन्द्रा मे थी। अश्रुविगलित नेत्रो से बोली, "ये तुम्हारा प्यार पुनः हरा भरा न हो पाता और न ही प्यार की कसौटी किसी सचेतन के हृदय की सच्ची परीक्षा ले पाती ....? राजू ने अपने सारे भावनात्मक उदगार इन्ही प्रश्नो के माध्यम से ममता पर उड़ेल दिये। वह खिलखिलाकर हँस पड़ी।

दोनों का मन हल्का हो चला था। राजू घूमने के बहाने सड़क पर निकल आया और सूनसान सड़क के सहारे एक निर्जन पार्क में वह पहुँच गया। माँ के पुराने आदर्शवाचक

शब्द शिल्प एक एक करके उभरते मानस पटल को झकझोर रहे थे। माँ बचपन में शिक्षा देती थी, "बेटा! हो सके तो सबकी भलाई के लिये कार्य करो। किसी कोमल दीन व्यथित हृदय को ठेस न पहुंचाओ। गाँधी, नेहरू, टैगोर, तिलक बनकर देश समाज का कल्याण करो। समस्त सृष्टि चक्र इसी शक्ति से संचार्यमाण है।"

तो क्या माँ ने ये सारी शिक्षाएं औपचारिकता के लिये दी थी? उसके मस्तिष्क में वेदना के लाल अंगारे दहकने लगे। पार्क में हाथ पैर पसार कर वह जड़वत लेट गया। कटु वाणी की चोट उसे निष्चेष्ट कर रही थी। पार्क के सूनेपन में आज उसे प्रकृति का स्वच्छ आँचल जो मनमोहक वायु की चंचल तरंगो से वाचालित था, मिल रहा था। स्निध्य श्याम माधवीलता का रसरंजित मधुरिमा का सानिध्य पाकर वह स्वप्न लोक मे विचरण करने लगा ।

ममता मेरी सहपाठिनी ही तो थी?" वक्त बेवक्त वह मुझे कभी कबार छुपे नजरो से देखा करती थी। जिसका प्रत्युत्तर मे मूक दृष्टि से उसके चंचल आँखो मे विसूरते भोलपन मे उड़ते देता था। एम0 ए0 की कक्षा का अंतिम दिवस था। दीक्षान्त समारोह के दिन समस्त छात्र संकुल उपस्थित था। संगीत की सुमधुर झंकारो के बीच उस सुकष्ठ लावण्य समलंकृत बाला ने इन शब्दो से उपस्थित समग्र समुदाय का दिल जीत लिया था –

"छुपछुप मीरा रोय, दर्द न जाने कोय,"

मेरा भी दर्द वह पिघल कर चला था, बदले में..."दिल जलता है तो जलने दे आँसू न बहा फरियाद न कर ....."

संतोष की सांस लेते हुए वह पहली बार मेरे करीब आई थी। मेरे जीत की प्रशंशा करते हुए मुझे अपने घर पर चलने की याचना मुझसे की थी। घर पहुँचने पर उसने मेरा परिचय करवाया अपने पिता जी से...... ।" "कितना जर्जर शरीर,..... । तन पर एक फटी लंगोटी, सिर पर एक गंदी सी रंगीन रूमाल, शायद वह खरीदी जाने के बाद कभी धुली नही गयी थी। शरीर पर उभरी हुई फूलीफूली सी नसे जिसमे घीना घीना सा रक्त बह रहा था....... । बीच बीच मे खाँसते तो वसरो खून मुहँ से उगल आता था। कातरता से भरी आँखे मानो कहती थी– "हे प्रभु तेरी इस मायावी दूनिया मे बहुत जी चुका हूँ। अब मुझे मृत्यु शैया पर सुला दे। अब जिया नही जाता।

यह सब देख कर मै स्तब्ध सा हो गया। ममता के कातर नैन चुप थे। गला रूँधा रूँधा सा भर्राया था। जैसे किसी ने कस कर घिघ्घि बाँध दी हो। प्राण बेसब्री से बाहर निकलने का प्रयत्न कर रहा हो। टूटी बसखट पर उन्होने बैठने का इशारा किया। शायद रूखे कण्ठ को पानी की जरूरत थी। पर पानी पीते ही उनके प्राण पखेरू उड़ चले। पिंजरा टूटी चारपाई पर पड़ा रह गया।

नहीं पिता जी .... । हम दोनो चीख पड़े थे।

पुत्रवत मैने सारी रस्मे पूरी कर दी थी। केवल उनकी एक आकांक्षा को छोड़ कर जिसके दायरे मे सारी बंदिशे थी, ...समाज के दहकते अंगारे, और तुसारपात होते हुए भीषण ओले भी .... ।

स्वप्न लोक मे स्मृति का दीपक बरसात में चमकती बिजली की तरह कभी जल उठता तो कभी बुझ जाता, किन्तु इससे वेदना का अन्धकार शान्त होने की बजाय और उठ भड़क उठता जो सहज मानवीय वृत्तियो को अपने मे समेट कर स्मृति पीड़ा सिन्धू मे डूबो देता था। ममता गम के अंधकार मे अकेली थी। जिसके साथी के रूप मे उसके पिताजी ने मुझे नियुक्त किया था, किन्तु हाय रे मेरा दुर्भाग्य कि मेरा साया भी उसका साथ नही दे पा रहा था। जीवन यदि रोने से कट जाय तो आदमी जिंदगी भर रो सकता है। लेकिन परिस्थितियाँ अनूकूल प्रतिकूल होती रहती है अतः प्रकृति हँसने का भी समुचित उपकरण प्रदान करती है। ममता तन्हाइयो के आगोश मे बैठी पुराने जीवन की लहरो मे उन्मत्तता से तैर रही थी। मुझसे रहा न गया। समीप से मैने आवाज दी –"ममता?" वह चौंक गयी। "अरे तुम?" कब आये?

आज मै अपने अंतरमन की आवाज स्पष्ट करना चाहता था, परन्तु प्रयास के बावजूद आवाज न निकली। फिर भी चेहरे के हाव भाव उसके सामने स्पष्ट से लगते थे। कि मै उसका दामन थामना चाहता हूँ।

वह शरमा गयी जैसे आम्रलतिका से प्रच्छिन्न माधवी लता हो। स्वप्न सागर मे संचारण करने लगी। उन्मत्त यौवना मुकुलित थी। अंधेरो पर तपन और प्यास के निशन झलकते थे। दूरियाँ नजदीकीयों मे बदल गयी। दोनो से रहा न गया। राजू ने अपना हाथ बढ़ाया। ममता का आँचल विस्तृर्ण हो गया। दोनों एक दूसरे को अपने बाहो की माला पहनाकर खो गये। उस भविष्य की सुवासित अभिकल्पना मे जहाँ प्राण की सुखद तरंगे विद्यमान थी। अधर प्रफुल्लित हो उठे। शरीर मे कम्पन था। दोनो एक दूसरे के कदमो के निशान पर चलने रची कारोक्ति में थे।

ममता के कपोलो पर रत्तिमा सी छा गयी। नयनो से नीर बहने लगे। तन बदन मे सिहरन सी दौड़ गयी। मधु प्यासी भृंगिणी की भाँति वह मधुकर चारो तरफ फेंटे लगाने लगी। उसकी आत्मा कहने लगी–"क्यों न सातो फेरे आज ही लगा लिये जाय। सारी रश्मे अभी ही पूरी कर ली जायँ।

उस दिन जब मैं घर लौटा तो काफी देर हो चुकी थी। दूसरे दिन पिताजी हैदराबाद से आये थे। समय सब कुछ बता देता है। पिताजी मेरे उखड़े हालात देख कर कुछ पूछना चाहते थे। मौका अच्छा था। पितृ स्नेह के कारण मैने भी सारी बातें बता दीं। पिताजी ने हामी भर ली किन्तु मम्मी ने केवल वाह्य प्रपंचों और याविन का नशा मात्र समझ कर नाकार दिया। मेरी हालात विगड़ने लगी। उदास पंक्षी सा घर के पिजड़े में मै कैद रहने लगा। डाक्टर वैद्य की

दवाएं कुछ काम न करती थी। राग वही न पता हो तो वे दवा ही क्या करते। हार कर माँ ने भी मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था। मेरे खुशियों की महफील पुनः सजने लगी यह बात ममता को मालूम हुई तो उसकी खुशियों का ठिकाना न रहा। मुझसे मिलने वह प्रफुल्लित हो सीने से लग गयी। साधारण रश्मे रिवाज के साथ मैने उसके साथ कोर्ट मैरेज कर लिया।

दिन गुजरने लगे। माँ पड़ोसियों के ताने और व्यंग्य वाणों से घायल होकर कभी–2 सारा गुस्सा ममता पर उड़ेल देती। कलंकिनी को लेकर न जाने कितने अप–शब्द उसकी जबान के शब्द कोश में थे जिसे वह सर्वथा प्रयोग करना मौलिक अधिकार समझती थी। काफी दिन बाद पिता जी का एक पत्र हैदराबाद से आया। लिखा था–"प्रिय राजू यथा सम्भव एक हप्ते तक तुम हमारे पास चले आओं। मैने साहब से बात कर लिया है, तुम्हारी नौकरी लग जायेगी" माँ की यातनाएँ ममता के प्रति वढ़ती जा रही थी। सुधातुर ....दीन हीन भिखारी की भाँति। वह रो पड़ी। कदमों मे गिर कर गिड़गिड़ाने लगी। आँसुओं के धार रूक नही पाते थे। बज्रपात तो एक तो एक बार में जीवन लीला समाप्त कर देता है परन्तु ब्यंग्यवाण जीवन भर चुभते रहते हैं। जीवकोपार्जन जीवन का आधारभूत पहलू है अतः येन केन प्रकारेण मैने ममता को समझाकर यथाशीघ्र व्यवस्था करने के उपरान्त साथ ले चलने का वादा करके हैदराबाद की ओर प्रस्थान किया।

हैदराबाद का समुद्री तट! वहीं पर जूट निगम का छोटा सा सुन्दर दफ्तर। बगल तक सागर की उँचीं उन्मत्त लहरें किलार करती हुई पवन के साथ अपने खीफर बिन्दु से शरीर को शीतल स्पर्श देकर सिहरन पैदा करती थी। वह मनोरम वातावरण मुझे पुलकित सा कर गया। वहीं पिता जी से मुलाकात हुई। चरणरज लेने के बाद कुशल क्षेम हुआ। नौकरी के बारे में वार्ता साहब से पहले ही हो चुकी थी अतः दूसरे ही दिन से मैने काम करना शुरू कर दिया। चार पाँच दिन बाद घर से पत्र आया। ममता का चेहरा उसमे दिखई पड़ता था जैसे चाँदनी रात मे के साथ चाँद.....। लेकिन कलंक की छाया उसे पीड़ा दे रही थी। बीच बीच मे आसुओं के दाग उसके धुटन और और कराह के सक्षात गवाह थे। माँ के शब्द –" हरामजादी पत्र लिखती है एक तो उसका जीवन नष्ट कर डाला उस पर पत्र लिखतीहै। पता नही क्यों भगवान ने मुझे बहू का सुख नही दिया। कान खाल कर सुन ले कुतिया अब अगर ऐंसी हरकत की तो तुम्हारा गला धाटते देर न लगेगी। माँ की इन कठोरतम पीड़ाओं से वह हताश सी हो चली थी। काम का बोझ इधर मेरे उपर भी हाने से मै भी कुछ लापरवाह सा हो चला था। पत्र भी अधिक दिनो के अन्तराल पर लिखने लगा उधर माँ और पत्नी के बीच द्वन्द दो शक्यिों के बीच का महाभारत बन चुका था। मेरे प्यार के अहसान के नीचे ममता थी तो मै अपने माँ के मातृत्व कर्त्तब्य बोझ के अहसान के नीचे दबा था। उस पर जीवन निर्वाह हेतु नौकरी की दूरी। अभी तक ममता जड़ विकारों से ग्रस्त थी। शयद वह सहन शक्ति के बल पर अपने का अपराधनी मानते हुए सव कुछ सहज बनाये हुए थी परन्तु आज उसका क्रंदन सीमा पार कर गया। बोली माँ अभी तक तो मैने देखा था कि माँ की ममता ही महान है परन्तु आज मै समाज को तुम्हारी क्रुरता के इतिहास का संदेश दूँगीं। यदि मेरा जीवन ही तुम्हारे परिवार का सुख संसार नष्ट कर रहा है तो मैं अपने प्राणों का उत्सर्ग करती हूँ। लेकिन तुम्हारा सुख न छीनूँगी। माँ के लिए क्या इतना भी बलिदान नहीं किया जा सकता ? यह जीवन एक रणस्थली है , मेरा उत्सर्ग उसर भूमि के लिए भी उर्वराशक्ति होगा। परन्तु यह क्या? आज माँ की ममता का आँचल पुनः विस्तीर्ण हो चला। अपने समस्त कियें गये अपराध पर उसे पश्चाताप हाने लगा सारी व्रज सी कठोरता पिघल गयी और उसने ममता को अपने आँचल मे यूँ छिपा लिया जैसे अपने पंखों के डैने के भीतर कोई चिड़िया अपने नवजात शिशु को छिपा लेती है। ❍

वह दिन जरूर आयेगा

✍ बलराम सिंह

वह दिन जरूर आयेगा
जिस दिन तुम हमारे करीब होगे
हम तुम्हारे करीब होंगे
सब हमारे करीब होंगे
हम सबके करीब होंगे
वह दिन जरूर आयेगा

वह दिन जरूर आयेगा
जिस दिन दीवारें टूट जायेंगी
केवल एक आँगन होगा
और उस आँगन में हम सब होंगे
वह दिन जरूर आयेगा

वह दिन जरूर आयेगा
जब सबकी अंजुरी में धूप होगी
सब के चेहरे पर सूर्य की रोशनी होगी
दिशायें चिटखे
दूरियाँ सिमट जायेंगी
सबका एक दर्द होगा
सुख सबका होगा
वह दिन जरूर आयेगा

वह दिन जरूर आयेगा
प्रतीक्षा करने में क्या हर्ज है
अभी तो एक ही जीवन बीता है
असंख्य जीवन भी बिताना पड़े,
तो कोई बात नहीं
पूजा सच्ची है तो
वह दिन जरूर आयेगा

वो आज भी आशिक है

- ✡ अधिकतर स्त्रीयों की यहीं शिकायत रहती हैं कि अरेंज मैरिज हो या लव मैरिज। मैरिज रह जाती है, पर लव चला जाता है।
- ✡ लव तो जा ही नहीं सकता। लव की तो यही विशेषता है जब किसी के जीवन में दिल से आता है, तो कभी वापस नहीं जाता।
- ✡ "मैं पूछतीं हूँ इतनी देर हुई कैसे। जब तुम्हारे साथ बाले आ गये, तो तुम कहॉ थे।" अपनी पत्नीयों को कभी अपने से अलग मत समझे वो आपके इतने करीब होती है जितना सीने से दिल।

0vuhrk pkSgku

अधिकतर स्त्रीयों की यहीं शिकायत रहती हैं कि अरेंज मैरिज हो या लव मैरिज। मैरिज रह जाती है, पर लव चला जाता है। क्या वास्तव में आपके बीच का लव चला गया है। अगर आप ऐसा सोचने लगी हैं तो बिलकुल गलत सोचती है।

लव तो जा ही नहीं सकता। लव की तो यही विशेषता है जब किसी के जीवन में दिल से आता है, तो कभी वापस नहीं जाता। आप अपनी दिनचर्या में जब उसे अनदेखा कर देती है, तो लव गुम हो जाता है। किंतु जाता नहीं। जरूरत है तो उसे ढूढ़ने की।

आज आपके पति देव पूरे दो घंटे लेट हो रहे हैं। बार–बार आपकी नजर घड़ी के काटों पर टिक जाती है। यहीं चिंता खाए जा रही है। इतनी देर क्यों हो रही है। मन में तरह–तरह के विचार आ रहे है।

ऐसे में उनका आना हुआ तो आपने क्रोध का ज्वार उड़ेल दिया। "मैं पूछतीं हूँ इतनी देर हुई कैसे। जब तुम्हारे साथ बाले आ गये, तो तुम कहॉ थे।" आपकी यह बातें सुन वो भी बोल पड़े।

"कहॉ था? गप्पे लगा रहा था। तुम्हें पता है कि नौकरी चाकरी कैसे होती है। घर में बैठे–बैठे जुवान ही चला सकती हो।" बस अब दोनों के बीच रूठा रूठी शुरू। बस यही माहौल आएदिन का किस्सा बन जाता है। घर की शांती मिटने लगती है। कुछ दिनों में फिर इसी बात पर बहस हो जाती है ओर वो तो आपसे यह भी बोल जातेहै–

"हॉ, जान बूझकर नहीं आता मैं। यहॉ आकर तुम्हारी सूरत जो देखनी है।"

बस यहीं आप दुखी हो जाती है। और सोचने लगती है कि एक दिन वो आपके आशिक थे। आपके आगे पीछे फिरते थे। आपके रूठनके से उनकी जान पर बनती थी। लेकिन आज शादी बाद वो इतने बदल गये। आज तो उन्हें आपकी सूरत तक पसन्द नहीं। इसी बात को दिल से लगा लेती है और यहीं पर आपके बीच की मुहब्बत गुम हो जाती है।

लेकिन ऐसा नहीं है। उनकी जुबान से निकले हुए शब्द उनके दिल की वास्तविकता नहीं है।

जिस तरह आपका क्रोध मात्रा उनकी चिंता और मुहब्बत के कारण है। लेकिन आपके इस क्रोधपूर्ण व्यवहार से आपके पति भी यह सोचने लगते हैं कि जिसके लिए वो इतना श्रम करते हैं, पैसे कमाते हैं। आखिर उसी को कदर नहीं है। भरोसा नहीं है।

ऐसे घर में जल्दी जाने से क्या फायदा और यहॉ आप उनका इन्तजार करती होती है। आप उनसे बहुत प्रेम करती है। बहुत प्रेम होते हुए भी कहीं बहुत दूरियॉ न बन जाये। हमारी इन बातों पर विशेष ध्यान दीजिए।

अगर आपके पति देर से घर आते है तो आते ही उनसे देरी का कारण ना पूछे। उन्हें देखकर थोड़ा सा मुस्करा दे। फिर उन्हें पानी दे। अगर वो चिंतित नजर आये। तो अपनी ऊगलियों का स्पर्श उनके बालों को दे। फिर उन्हें खाना परोसे और भोजन करें। आपके पति को आपके इस व्यवहार से शकून और खुशी मिलेगी। फिर बाद मेंआप उनसे सिर्फ इतना कहे। आपको थोड़ी देर क्या हो गयी मुझे तो बड़ी चिंता हो रही थी।

आपकी यह बात सुनकर वो आपको स्नेह करते हुए अपने देर से आने का कारण बता देंगे। उनके मन को जो अच्छा लगे उसी ओर अधिक ध्यान दे। फिर देखिए आपके पति अपना एक घन्टे का काम आधे घन्टे में निपटाकर जल्दी आपके पास आने की कोशिश करेंगे।

अगर मुहब्बत घरा में बसी हो तो पुरूष बाहर रह ही नहीं सकता और आपका दिल यही कहेगा वो आज भी आशिक है। पत्नीपन का रोब जमाना ठीक है। लेकिन कभी–कभी अगर हो सके तो आप अपने पति की मित्रा बनने की कोशिश करे उनके हमराज बने।

हमराज और मित्राता आपको एक अच्छे पति–पत्नी बनायें रख सकती है। लेकिन कुछ पति अपनी पत्नियों को अपना राजदार नहीं बनाते। वो यह सोचते है कि अपनी परेशानियॉ उनको क्यों सुनाये। लेकिन ऐसा सोचने से क्या उनकी पत्नीयों की चिंता कम हो जाती है। उन पत्नीयों की परेशानी (चिंता) और बढ़ जाती है। इससे तो वो हरवक्त यहीं सोचती रहती है कि न जाने वो क्यों परेशान है। यह चिंता उन्हें ज्यादा दुःख देती है कि उनके पति उन्हें अपने दिल की बात नही बताते। आपकी एक चिंता आपकी पत्नी को दो चिंताओं में डाल देती है। अपनी पत्नीयों को कभी अपने से अलग मत समझे वो आपके इतने करीब होती है जितना सीने से दिल। इस कारण हम कहते है–

हम ही हमराज; हंसी होता है,
जो दिल से बसाये,
आशियां वो सुखी होता है।

प्रतीक्षा

यहीं विश्राम करिए मै अभी बाहर से थोड़ी देर में आता हूँ, कह कर वह व्यक्ति कही चला गया उसके जाने के बाद दोनों बहने अभी सम्भली भी नहीं थी कि वह औरत जोर जोर से हॅसती हुई उनके पास आ कर बैठ गई और कहने लगी भाग जाओ जल्दी से भाग जाओ, यह आदमी बड़ा जालिम एवं खूँखार है यह तुम दोनो को जिंदा नही छोड़ेगा इसी जालिम ने मेरी यह दशा की है।

✍ श्रीमती मंजु सिंह

विचारों में खोई स्मृति अपने दिवंगत पिता के बारे में सोचने लगी उसके पिता समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में थे जो सत्य के पक्षपाती ईमानदार एवं अत्यन्त सहदय व्यक्ति थे। एक समय था जब डॉ0 एस0 डी0 माथुर के यहॉ गाड़ी, बंगला, नौकर, चाकर सभी कुछ था, सुख के अलावा दुःख का अनुभव इस परिवार ने किया ही नही था, पर अचानक इस परिवार को मानो ग्रहण सा लग गया और विपत्ति का पहाड़ टूटता ही चला गया। पिकनिक पर अपने परिवार के साथ निकले डॉ0 माथुर को क्या पता था कि लौट कर वे अपने बंगलें में वापस नही आएगें। बारिश का महीना था, सितम्बर महीने की घनघोर बारिश होने पर भी वे प्रकृति के मनोरम दृश्यों को देखने की इच्छा को नहीं रोक पाए और अचानक पिकनिक का प्रोग्राम बना डाला। प्रतीक्षा, श्रुति और स्मृति पापा के इस विचार से बहुत खुश थी उनकी पत्नी नयना न चाहते हुए उनकी खुशी के लिए अनमयस्क भाव से फियेट पर बैठ गई। घनघोर मूसलाधार बारिश तथा अंधरें के कारण रास्ता साफ नही दिख रहा था, साथ ही एकान्त, विरान, एवं निर्जन था। जहॉ यदा कदा भूले–भटके कोई आदमी दिख जा रहा था। पुनः वही सन्नाटा, डॉ0 माथुर ने सोचा गाड़ी को तेज रफ्तार से चला कर इस निर्जन रास्ते को जल्द से जल्द पार कर लिया जाए पर होनी को कुछ और ही मंजूर था। तेजी से आती हुई सामने की ट्रक ने ऐसा टक्कर मारा कि डॉ0 माथुर वही पर चिरकाल के लिए सो गए। उनकी पत्नी नयना बेहोश हो कर गिर पड़ी सिर पर गम्भीर चोट आने के कारण उनकी स्मृति भी जाती रही। डॉ0 माथुर की तीनों बेटियां ऐसी भयावह स्थिति की कल्पना भी नही की थी। स्मृति मॉ को सम्हालने के लिए वही रूक गई। श्रुति और प्रतीक्षा को काफी संकट का सामना करना पड़ा, नदी, नालो के अनजान बीहड़ रास्तों को पार करने के पश्चात् दूर कही रोशनी दिखाई दी दोनो तेजी से बढ़ती हुई दरवाजे तक पहुँच गई जोर से दरवाजा खटखटाया कुछ समय के पश्चात् एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति दरवाजा खोलते हूए बोला कौन? उन दोनो ने करूण स्वर में कहा कृपया दरवाजा खोलिए वह व्यक्ति उन दोनों को देख कर पूछा कहिए क्या काम है? उन लोगों ने अपनी सारी बात स्पष्ट रूप से बतायी और वह अपनी गाड़ी से उनको मदद की सांत्वना देता हुआ चल गाड़ी तेजी से चली जा रही थी वे दोनो आश्वस्त होकर बैठ गई जल्दी ही घर से आवश्यक सामान लेकर वे अपनी मॉ के पास पहुँच जाएगी। इस आशा में वे लगभग सो गई, परन्तु जब गाड़ी एक झटके के साथ लाल बॅगले के पास पहुँची तो उन्हे उस व्यक्ति पर थोड़ा संदेह हुआ मॉ एवं पिता की स्थिति को याद करके चुप हो कर बैठी रही काफी दूर चलने के पश्चात् उस व्यक्ति ने गाड़ी पुनः रोक दी, परन्तु अंधेरा होने के कारण कुछ भी स्पष्ट नही हो पा रहा था उस व्यक्ति ने दोनो को कार से नीचे उतरने को कहा और टार्च की रोशनी में तीनो चलने लगे चलते–चलते एक खंडहर सा मकान दिखाई पड़ा जहॉ टूटी–फूटी दीवारें कबूतर एवं चिड़ियों के घोसंले और दूर–दूर से कुत्तों की भौकने की आवाजें आ रही थी। ऐसे खडहर में प्रवेश करते हुए उसने कहॉ आइए थोड़ी देर विश्राम करने के पश्चात् आपकी मॉ के पास चलेंगें दोनों चुपचाप उस व्यक्ति के साथ उस खंडहर के अन्दर चल दी, वहॉ पहुँचते ही उन्हें एक औरत की चीखने की आवाज सुनाई दी बाचाओ! बचाओ! थोड़ा पानी चाहिए, अरे कोई मुझे थोड़ा पानी तो दे दे! उसकी आवाज सुन कर वह अधेड़ व्यक्ति बोला घबड़ाइए नहीं यह कोई पगली है जो रात को यूँ ही आ कर चिल्लाती है, आप लोग यहीं विश्राम करिए मै अभी बाहर से थोड़ी देर में आता हूँ, कह कर वह व्यक्ति कही चला गया उसके जाने के बाद दोनों बहने अभी सम्भली भी नहीं थी कि वह औरत जोर जोर से हॅसती हुई उनके पास आ कर बैठ गई और कहने लगी भाग जाओ जल्दी से भाग जाओ, यह आदमी बड़ा जालिम एवं खूँखार है यह तुम दोनो को जिंदा नही छोड़ेगा इसी जालिम ने मेरी यह दशा की है। मैं पागल नही हूँ, मेरी बात पर विश्वास करो, यह कहते कहते वह औरत भूख एवं प्यास के कारण बेहोश हो गई। और चिरकाल के लिए सो गई वे दोनो उस औरत की मौत से

बौखलाकर वहॉ से भाग निकली और दूर वीरानें में न जाने कहॉ भागती चली गई। स्मृति मॉ की बिगड़ती हुई हालत को देख कर घबराती हुई इधर–उधर देखने लगी बारिश थी कि रूकने का नाम नही ले रही थी तभी तेज रफ्तार से आती हुए एक फियेट दिखाई दी वह जोर से चिल्लाई प्लीज मेरी मदद करिए गाड़ी तुरन्त रूक गई उसमें से एक बहुत ही खूबसूरत युवक उतरा वह उसकी परिस्थिति को देखकर समझ गया कि इस समय उसकी मदद की समृति को बहुत ही आवश्यकता है। युवक ने कहॉ आप बिल्कुल मत घबराइए यह कहते हूए उसने स्मृति के पापा के मृतक शरीर को गाड़ी के पिछलें हिस्से में रखा तथा स्मृति अपनी मॉ को सम्हालती हुई युवक के साथ बैठ गई युवक ने उसकी मॉ को सम्हालते हुए उसका परिचय पूछा स्मृति ने सारी घटना को उसे स्पष्ट रूप से बता दिया। और अपनी दोनो बहनों के बिछड़ने तथा पापा की अचानक मौत और मॉ की स्मृति खोने की की दुर्घटनाओं से हताहत स्मृति युवक की आत्मीयता पूर्ण शब्दों को सूनकर फूट–फूट कर रोने लगी। उस युवक ने उसे बहुत समझाया तथ परिस्थिति का सामना करने के लिए उसे मजबूत करने का प्रयास करने लगा। पिता का अन्तिम संस्कार करने के पश्चात् स्मृति को मॉ के इलाज की चिंता होने लगी सोचने लगी कैसे मॉ का इलाज होगा, कभी अपनी दोनो बहनों को याद करके बिलख–बिलख कर रोने लगी। उस युवक को न जाने क्यों स्मृति से सहानुभूति बढ़ती चली गई और यही सहानभूति दोनो की मित्रता में बदल गई। एक दिन स्मृति लॉन में बैठी चाय पी रही थी न जाने कब उसका युवा मित्र उसक पीछे आ कर खड़ा हो गया, स्मृति ने उसे बैठने के लिए कहा और खुद उसके लिए चाय बनाने चली गई चाय लेकर लौटती हुई स्मृति ने कहा अब तक मैने आपका परिचय नही पूछाय आपका नाम क्या है? युवक ने कहा मेरा नाम शाश्वत है। मै यहॉ के जाने माने उद्योगपति सेठ धर्मदास का बेटा हूँ। यह सुनते ही स्मृति अपनी गरीबी एवं टूटते अरमानों, परिवार के बिखरने, मॉ की अवस्था को सोचती हुई शाश्वत से दूर लॉन में बैठ गई। सोचने लगी कहॉ यह उद्योगपति का बेटा और कहॉ मैं गरीब असहाय मॉ की बेटी, शाश्वत उसकी बात को समझ गया और वह यह जान गया कि स्मृति बड़ी स्वाभिमानी एवं साहसी लड़की है उसने कहॉ स्मृति घबराओं नही मैं तुम्हारा मित्र हूँ। मैं तुम्हारी हर तरह से मदद के लिए तैयार हूँ। कल मॉ के इलाज के लिए मैं तुम्हारी साथ हॉस्पिटल चलूँगा तैयार रहना। दूसरे दिन शाश्वत् अपनी गाड़ी लेकर स्मृति के बंगले पर आया पर स्मृति पैसे के अभाव एवं संकोच के कारण मॉ के इलाज के लिए कतरा रही थी शाश्वत् ने कहा स्मृति चिंता मत करो तुम यदि मेरी मदद ही करना चाहती हो तो बदले में मेरी अंधी मॉ जिसकी आखें में लाखों पैसे खर्च करके भी नही लौटा सका उसकी ऑख बन कर मेरे साथ–जीवन भर रह कर इस उपकार का बदला चुका सकती हो क्योंकि मुझे आज तक ऐसी ही साहसी एवं विषम परिस्थितियो का सामना करने वाली युवती की तलाश थी। और आज शाश्वत एवं स्मृति दाम्पत्य सूत्र में बॅध चुके है। मॉ कि स्मृति वापस आ चुकी है अपने बगलें में वह अपने मेहनत व स्वालम्बन से घर को सजा सवॉर कर रखती है। मॉ मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद देती है कि भगवान यदि पति छीना तो उसके स्थान शाश्वत जैसा बेटा भी दिया है। मॉ इन्ही अतीत की स्मृतियों में खोई विचार मग्न थी। तभी अपनी गाड़ी से स्मृति एवं शाश्वत उतरे मॉ को अपने साथ ले जाने को आग्रह कर रहे थे पर वह अपनी पति की स्मृति को छोड़ने को तैयार नही थी। मॉ के बाल सफेद हो गए है और अब वह हमेशा बीमार रहने लगी है आज मॉ की हालत बहुत खराब हो गई फोन करने की भी ताकत समाप्त हो गई एकाएक उसकी सांस रूकती हुई महसूस हुई उस समय उसके आखों के सामने अतीत के दृश्य क्रमशः आने लगें और वह घबरा के किसी तरह से फोन के पास पहुँची स्मृति, जल्दी से आ जाओ यह कहते–कहते उसकी आवाज रूक गई और वह जमीन पर गिर पड़ी उसकी ऑखें खुली की खुली रह गई। प्रतीक्षा में, दोनों खोई हुई बेटियों कि न जाने कहॉ खो गई दोनों इतनी बड़ी दुनियॉ में, प्रतीक्षा ही रह गई स्मृति से मिलने की । स्मृति आज बड़ी ही अस्त व्यस्त अवस्था में घबड़ा कर चली आई मॉ का फोन सुन कर परन्तु यहॉ तो सब कुछ समाप्त हो चुका था मॉ का साया हमेशा के लिए समाप्त हो चुका। अब रह गई प्रतीक्षा सिर्फ प्रतीक्षा अपनी बिछड़ी हुई बहनों से मिलने की............। शाश्वत यह दिलासा देता हुआ गाड़ी पर बैठ गया यह कहते हुए स्मृति प्रतीक्षा करो उस क्षण की जब मै तुम्हारी बहनों को तुमसे मिला कर रहूगॉ यह मेरा वचन है और आज भी स्मृति दरवाजे पर दौड़ कर आती है यह सोचकर की सम्भवतः आज शाश्वत मेरी बिछड़ी हुई को मुझसे अवश्य ही मिलवा देगा।

आवश्यकता है

मासिक पत्रिका **विश्व स्नेह समाज** हेतु उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, बिहार, दिल्ली एवं राजस्थान में

0 संवाददाता 0 विज्ञापन एजेंट 0 विज्ञापन एजेंट 0 ब्यूरो 0विक्रय एजेंट

हमें टिकट लगें जबाबी लिफाफे के साथ लिखें अथवा सम्पादकीय कार्यालय पर मिलें :

एल.आई.जी.–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

माह अगस्त के व्रत, त्योहार एवं साईत

पं0 शम्भू नाथ मिश्रा

श्रावण शुक्ल पक्ष

1.08 शुक्रवार : तृतीया, धर्म सम्राट श्री करपात्री स्वामी जयन्ती। मुसलमानी जमादि उस्मानी हिजरी सन् 1424। रवियोग रात्रि 9.48 से

2.08 **शनिवार** : चतुर्थी। भ्रदा दिन में 8. 09 तक। नागपन्चमी, नाम पुजा। तक्षम पूजा, काशी में नाग कूप यात्राा। गॉव–गॉव के विविध व्यायाम प्रदर्शन। रात्रि 8.16 के बाद पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की यात्राा।

3.08 **रविवारः** पंचमी। श्लेषा का सूर्य रात्रि 12.57। सभी कार्यो के लिए शुभ 7.10 तक। सूती स्नान मुहुर्त। नवीन खटिया, चौकी, कुर्सी आदि का उपयोग।

4.08 सप्तमी सोमवारः भद्रा 1.46 से। गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती। श्रावण सोमवार व्रत। रवियोग सायं 5.32 तक। जात कर्म, नामकर्ण, शिशु ताम्बुल अरूण, दोल रोहण अन्नप्रासन, औषध सेवन, जीर्णादि गृह प्रवेश का मुहूर्त है।

6.08, **नवमी, बुद्धवारः** सवार्थसिद्धयोग, अमृत सिद्धयोग दिन में 2.14 से। सभी कार्यो के लिए शुभ। रोग विमुक्त स्नान।

8.08 **एकादशी,शुक्रवारः** पुत्राादि एकादशी व्रत सबका।

9.08, द्वादसी, शनिवारः शनि प्रदोष व्रत–पुत्रा प्राप्ति के लिए, सागदान, दही त्याग व्रतारम्भ।

11.08, सोमवार, चतुर्दशीः व्रत की पूर्णिमा। श्रावण सोमवार व्रत। सवार्थसिद्ध योग दिन 7.53 से।

12.08 मंगलवार, पूर्णिमाः स्नानदान की पूर्णिमा। उपाकर्म–श्रावणी रक्षा बन्धन। संस्कृत दिवस। सोमव्रत–पंचक प्रारम्भ रात्रि 7.35 से। गौरी पूजा–दूर्गाचाका। हनुमत दर्शनम्।

भाद्र कृष्ण पक्ष

भाद्रपद मास में चातुर्मास्य व्रती को दही खाना वर्जित है।

13.08 बुद्धवार, एकमः लक्ष्मी सहित विष्णु को पलंग पर रखकर पूजन करने से अक्षयधन दाम्पत्य सुख प्राप्ति।

14.08 गुरूवार, द्वितीयाः भद्रा रात्रि 9. 18 से। मॉ विन्ध्यवासिनी तथा मॉ चन्डी देवी जयन्ती। रतजगा।

15.08 शुक्रवार, तृतीयाः भद्रा 9.32तक। कजली। श्री गणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय रात्रि 8.48। भारतीय स्वतन्त्राता दिवस।

16.08,शनिवार, चतुर्थीः पश्चिम –उत्तर दिशा की यात्राा का मुहुर्त है।

17.08 रविवार, पंचमीः मेघ तथा सूर्यराशि का सूर्य रात्रि 11.45। रक्षा पंचमी। सर्वार्थ सिद्धयोग दिन 12.56 से। शुभ मुहुर्त।

18.08सोमवार, षष्ठीः भद्रा दिन 1.35 से रात्रि 2.34 तक। हलषष्ठी व्रत। ललही छठ व्रत। भद्रा से पूर्व जातकर्म, नामकरण, शिशु ताम्बुल भक्षण। वाहन खरीदने का मुहुर्त है।

19.08मंगलवार,सप्तमीः श्रीकृष्ण जनमाष्टी व्रत। बुद्धाष्टमी पर्व। सवार्थ सिद्ध योग।

20.08 अष्टमी, बुद्धवारः नीशिथ व्यापिनी रोहिणी में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत। बुद्धाष्टमी पर्व। सभी कार्यो के लिए शुभ।

23.08 शनिवार, एकादशीः जया एकादशी व्रत सबका।

25.08 त्रायोदशी,सोमवारः भद्रा रात्रि 11. 47 से। सोम प्रदोष व्रत। मास शिवरात्रि व्रत। सभी कार्यो के लिए शुभ रात्रि 5.25 तक।

27.08, अमावस्या, बुद्धवारः कुशोत्पाटनी अमावस्या। "□ हुँ फट्"। इस मन्त्रा से कुश ग्रहण करना चाहिए। स्नान दान श्राद्ध की अमावस्या।

30.08 **तृतीया, शनिवारः** मुसलमानी रज्जव 7 हिजरी सन् 1424। वराहवतार। हरितालिका व्रत। चन्द्रदर्शन निषेध। पूर्व को छोड़कर अन्य दिशा की ओर यात्राा।

31.08 चतुर्थी, रविवारः वैनायिकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत।

लेखक / लेखिकाओं के लिए

1-dkx+t ds fl QZ ,d vksj i;kZIr gkf'k;k NksM+dj lqikB; v{kjksa esa fy[kh vFkok Vkbi dh gqbZ jpuk,W HkstasA

2-jpuk ds lkFk i;kZIr fVdV yxk] ys[kd dk irk fy[kk fyQkQk vkuk pkfg,A blds vHkko esa] ge jpuk ls lacaf/kr fdlh Hkh dkr okmRrj ugha nsaxsA

3-jpuk ds izFke i`"B ij ys[kd dk iwjk uke vkSj vUr esa ys[kd dk iwjk irk vafdr gksuk pkfg,A

4-dkbZ Hkh jpuk yxHkx iUnzg lkS "kCnksa ls vf/kd dh u Hkstas A ge ys[kdksa fQygkWy dksbZ ikfjJfed ugha nsrs gSaA

आवश्यक सूचना

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

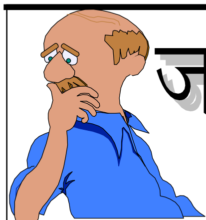

जरा हंस दो मेरे भाय

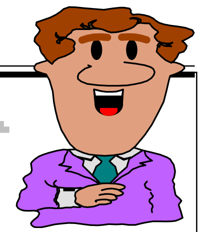

☠ एक खूबसूरत लड़की के लिए दो रिश्ते आए, लड़की सोचने लगी कि दोनों में से किससे शादी करुँ? फिर उसने सोचा कि क्यों न मैं रिश्ते के लिए कम्प्यूटर से मालूम करुँ।
उसने कम्प्यूटर से जानना चाहा कि मैं दोनों में से किससे शादी करुँ। कम्प्यूटर ने कहा कि ये दोनों तुम्हारे लिए ठीक नहीं है। तो लड़की ने पूछा कि मैं किससे शादी करुँ। कम्प्यूटर ने जबाब दिया क्या मैं मर गया हूँ।

☠ एक चपरासी : यार, इतने गुस्सें मे क्यों बैठा है?
दूसरा चपरासी : यह मंत्री बेकार में मुझे डांट गया।
पहला चपरासी : अरे, इसमें इतना गुस्सा होने की क्या बात है?
डी.एम. को भी मंत्री डांट देता है।
दूसरा चपरासी : हॉ क्यों नहीं यार, एक टेंपरेरी आदमी, परमानेंट आदमी को डांट गया।

☠ घड़ी खरीदने गये नेता जी ने दुकानदार से पूछा -'महाशय ये घड़ी कितनी दिन चलेगी?
दुकानदार ने उत्तर दिया : हुजूर, आपकी सरकार से तो ज्यादा ही चलेगी।

☠ शादी के कुछ महीने बाद एक पत्नी ने अपने पति से कहा कि आप अपने को ज्यादा अक्लमंद न समझो। जब तुम शादी का प्रस्ताव लेकर हमारे घर आये थे। तो एकदम मूर्ख लग रहे थे।
पति : मूर्ख लग रहा था नहीं, तब मैं बिल्कुल मुर्ख ही था वरना तुम से शादी हीं क्यों करता।

☠ एक युवक ने अपने मित्र से कहा- यार, यदि मैं किसी अमीर लड़ी से शादी कर लूँ तो मेरी आर्थिक तंगी दूर हो जाए।
युवक मित्र : तो कर क्यों नही लेते।
मित्र : पर यार, यह बात मेरी पत्नी को कौन समझाए।

☠ मरीजः डॉक्टर साहब, आपने मेरे इतने सारे टैस्ट करवाप डाले लेकिन आपने अब तक मुझे यह नहीं बताया कि बीमारी क्या है?
डॉक्टरः भाई मैं तो फाइनल रिपोर्ट—पोस्टमार्टम की रिपोर्ट देखने के बाद ही बताऊंगा।

☠ एक साहब खुदा से दुआ कर रहे थे, 'ए खुदा! मैं अपनी बीबी से तंग आ गया हूं। मैं अब जीना नहीं चाहता। मुझे मौत दे दे।'
इस बार बीबी ने कहा,'ऐ खुदा! इनसे पहले तू मुझे उठा ले। मैं अब एक पल भी जीना नहीं चाहती।'
ये सुनकर शौहर ने जल्दी से कहा, 'ए खुदा! तू इसकी दुआ कबूल कर लो। मैं अपनी अर्जी वापस लेता हूं।'

☠ फिल्म अभिनेता (निर्देशक से)— तीन—तीन हीराइनों के साथ प्रेम प्रसंग निपटाना काफी कठिन लग रहा है।
निर्देशकः घबराओ नहीं परेशानी सिर्फ एक के साथ ही आएगी, जो तुम्हारी पत्नी है।

☠ पत्नी का होंठ ऊपर से थोड़ा कट गया। डॉक्टर ने टांके लगाकर दवा लगा दी। पति चुपचाप सब देखता रहा। फिर धीरे से डॉक्टर के कान में बोला, 'डॉक्टर साहब, दोनों होंठ सीने की आप कितनी फीस लेंगे।'

☠ शराब के नशें में धुत पति से पत्नी ने कहा,' क्या नशें में आपको मेरा नाम भी याद नहीं रहता।'
'शराब पीने के बाद मैं हर गम भूल जाता हूं। पति बोला।

☠ पागलखाने में एक पागल काफी देर से एक दीवार से सटकर खड़ा था। जब वह काफी देर उसी हालत में खड़ा रहा तो वहां का डॉक्टर यह नजारा देखकर चकराया। वह कुछ बोलता, इससे पहले पागल ने उसे चुप रहने का इशारा कर दिया। डॉक्टर ने सोचा 'देखू आखिर बात क्या है? हो सकता है इससे कोई आवाज वगैरह आ रही हो।' वह भी दीवार से कान लगाकर खड़ा हो गया। करीब पांच मिनट बाद वह वहां से हटा और बोला,' तुम क्या सुन रहे हो, मुझे तो कुछ सुनाइ नहीं देता।'
पागल बोला,'अबे पागल, मैं घंटे भर से यहां कान लगाए खड़ा हूं। अब तक मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया तो तुम्हें इतनी जल्दी क्या खाक सुनाई देगा?'

pkSdkrkevdfoyykbZUlsa [kqyx;kdM+HksdkHkCkjks
स्टूडेन्ट्स टेलर्स, शगुन चौक की नई भेंट
कलेक्शन
THE REVISIT SHOP
Raymond
मीना बाजार के सामने, सेल्स टेक्स आफिस के नीचे सिविल लाईन्स, इलाहाबाद
फोन : 2608082

शारीरिक विकलांगता–अर्थराइटिस रोग

गलत खान पान अनियमित आचार–विचार से हम स्वस्थ रहकर भी विकलांगों की श्रेणी में आते जा रहे है। अपने दैनिक कार्य करने में भी अक्षम हो जा रहे है। अर्थराइटिस की जटिलता जीवन को जटिल कर देती है।

अर्थराइटिस क्या है:–'अर्थराइटिस' दो ग्रीक शब्दों से मिलकर बना है–'अथरान' अर्थात् जोड़ 'आईटिस' अर्थात् जोड़ो की सूजन विभिन्न हड्डियों को जोड़े रखने का कार्य अस्थि बन्ध अर्थात् (टिमगामेंट) करते हैं। इन हड्डियों की सतह पर एक तरल पदार्थ निकलता है जिसे (साइनोवियज फ्लुईडस) कहते हैं, ये हड्डियों की सतह को चिकना करते रहते हैं जिसके कारण गति स्वाभाविक एवं आसान बनी रहती है तथा गति करते समय किसी प्रकार की पीड़ा या टकराहट अस्थियों में नहीं होती। बहुत से जोड़ों के पास तरल पदार्थ की थैलियां होती है जिन्हें (बरसा) कहते हैं। विभिन्न हड्डियों के सन्धि स्थानों पर गति भिन्न–भिन्न प्रकार की होती है। जैसे–कुछ संन्धियां गोलाई में घूमती है, कुछ दॉयें–बायें, कुछ आगे पीछे आदि।

अर्थराइटिस के लक्षण: जोड़ो की तकलीफ में शुरूआत में :–

1. ज्वर आता है जिसे रयूमेटिक ज्वर भी कहते हैं। कमजोरी थकान, भूख की कमी, एक से अधिक या सभी जोड़े में दर्द सूजन।
2. शुरू में जोड़ो के तंन्तु मुलायम फूले एवं सूर्ख होते हैं किन्तु निरंतर ये कठोर होते जाते हैं। उठने के बाद आसानी से खड़ा होना या बैठना कठिन हो जाता है।
3. सुबह उठते समय दर्द की अनुभूति अधिक रहती है। धीरे–धीरे दिन निकलते दर्द एवं कड़ापन कम हो जाता है।
4. अर्थराइटिस जोड़ों के सूजन ही नहीं बल्कि उनमें विकृति आ जाती है। मांस पेशिया, स्नायु, तंन्तु, भयंकर रूप में प्रभावित होते जाते हैं।
5. रोगी थका, पीला, शरीर के जोड़ो में सुई चुभने जैसी पीड़ा होती है।

अर्थराइटिस के कारण:

1. अर्थ राइटिस का प्रमुख कारण लगातार कब्ज बने रहना, व्यायाम की कमी अप्राकृतिक जीवन शैली, धुम्रपान, मद्यपान, ठंडी वस्तुएं एवं प्रोटीन का अधिक प्रयोग।
2. पीपयुक्त दांत भी अर्थराइटिक का एक प्रमुख कारण है।
3. बार–बार चोट लगना, और उससे निदान की उपेक्षा करना।
4. शरीर में विटामीन सी की कमी, प्रोटीन की बहुलता होने से प्रोटीन का पाचन ठीक से नहीं हो पाता तो ये तत्व युरिक एसिड में परिवर्तित हो जाते हैं, जिससे जोड़ो में युरिक एसिड का जमाव हो जाता है।
5. लीवर एवं किडनी के असंतुलन जिसका कारण अधिक गरिष्ठ भोजन है। शनैः शनैः हम श्रम की कमी आराम की अधिकता से विकलांगता ग्रहण करते जाते है।

अर्थराइटिस के प्रकार: अर्थराइटिस 60 प्रकार की होती है। जिसे अमेरिकन अर्थराइटिस फांउडेशन के अनुसार माना जाता है। जिनमें मुख्यतः निम्न है–

आस्टियों अर्थराइटिस: (आस्थ संन्धि शोथ)– हड्डियों के जोड़ों की चिरकालिक क्षीणता अधिक उम्र होने पर यह रोग होता है। यह अधेड़ उम्र के लोगों को होता है। पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं में इस रोग की अधिकता पायी जाती है। यह उन स्त्रियों में अधिक होता है जिनका मासिक समाप्त हो गया हो।

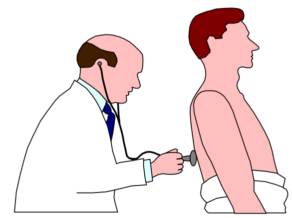

डा. कुसुमलता मिश्रा
एक्यूप्रेशर चिकित्सिका

यह रोग आमतौर पर अंगूठे, घुटने एवं नितम्बों में पाया जाता है। यह रोग पंगु बनाने वाला नहीं है इसे आस्टियों अर्थ राइटिस भी कहते है।

रूमैटाइड अर्थराइटिस:– यह 25 से 50 तक के आयु वर्ग में होता है। कभी–कभी यह रोग बच्चों में भी देखा गया है। इस प्रकार की अर्थराइटिस में सभी जोड़ों में सूजन आ जाती है। सामान्यतः इस रोग में शरीर की शक्ति क्षीण होने लगती है। एक से अधिक जोड़ प्रभावित होते हैं। यह रोग ठंढें स्थानों में रहने से अधिक होता है। इस रोग का प्रमुख कारण है कि झील्ली की सूजन जिसे साईनोाावियल फल्यूडस की मेम्बरेन कहते है। रक्त वाहिकाओं में विकृति तथा श्वेत रक्त कणों (W.B.C)को जोड़ो के इर्द–गिर्द अधिक मात्रा में जमा हो जाना भी एक प्रमुख कारण है।

रूमैंटाइड अर्थराइटिस का दुखदायी पक्ष यह है कि यह सारे जोड़ों को प्रभावित करता हुआ हृदय फेफड़े रक्त सारे अवयवों को विकृत कर देता है। कभी–कभी दर्द की अनुभूति बिल्कुल नहीं होती, अचानक तीव्र दर्द की तेजी हो जाती है।

गठिया (गाउट):– सामान्यतः यह एक अनुवांशिक रोग है जो प्रायः स्वस्थ पुरूषों में 25 से 40 वर्ष की आयु में होता है। यह

रोग महिलाओं में कम देखने को मिलता है। इसमें कलाई, कुहनी, टखनों का जोड़ प्रभावित होता है। गठिया भी चपापचय (मेटाबोलिज्म) से सम्बन्धित रोग है। आमतौर पर गठिया का प्रहार पैर के अगूंठे के जोड़ पर होता है। अर्द्धरात्रि के बाद अचानक तीव्र पीड़ा के साथ अंगूठा लाल हो जाता है। सूजन के साथ अंगूठे वाले भाग में तीव्र दर्द होता है। आश्चर्य की बात यह है कि गठिया अर्थराइटिस की अन्य श्रेंणियों की अपेक्षा जल्दी नियंत्रण में आ जाता है।

एंकी ल्यूजिगं अर्थराइटिसः— यह अर्थराइटिस की वह श्रेणी है जिसमें रिढ़ ही हड्डी प्रभावित होती है। उसमें कड़ापन एवं जकड़न हो जाता है। व्यक्ति वन पीस बन जाता है। कुछ रोगियों में रिढ़ की हड्डी के अलावा नितम्ब तथा जाघों के पिछले भाग में दर्द होता है। कुछ के गर्दन घुटने भी प्रभावित हो जाते है। वक्षस्थल में दर्द होता है। इसका कारण रिढ़ की हड्डी में सूजन आ जाने से छाती पूरी तरह नहीं फूल पाती, बड़ी आंत का प्रदाह सोराइसिस, चर्म रोग हो जाता है।

जुवेनाइल क्रानिक अर्थराइटिसः— बच्चों में पाये जाने वाले अर्थराइटिस की श्रेणी में यह आता है। सामान्यतः 16 वर्ष के पूर्व के बच्चों में यह रोग पाया जाता है। अंग्रेज चिकित्सक डा0 जार्ज फेडरिक स्टिलानों बच्चों में होने वाली अर्थराइटिस पर शोध किया कि यह पांच वर्ष की आयु तक बच्चों में होता है। यह लड़को की अपेक्षा लड़कियों में होता है। इसमें रिढ़ की हड्डी प्रभावित होती है और अन्य अर्थराइटिस के प्रकारों में बरसाइटिस, मांस पेशी रूमैटिक।

अर्थराइटिस का उपचार एवं क्या न खायें क्या खायेः—

✡दही का सेवन न करे फ्रिज का गंदा पानी एवं रख रखाव पदार्थ खाने से सर्वथा बचें इमली खटाई चटनी अचार तथा अत्यधिक खट्टी फलो से बचे ये रक्त में मल पदार्थ का संचय करते हैं। आवला और खट्टे होने पर भीह हानिकारक नही हैं। इनका सेवन लाभदायक है।

✡ गेंहूॅं, मक्का, जौ, चना, का प्रयोग करें किन्तु दालों का प्रयोग बंद कर दें विशेष तौर पर अरहर की दाल राजमा, उरद, मंसूर।

✡माड़ वाली वस्तुये वर्जित है, जैसे भिन्डीं अरवी कटहल इन सभी पदार्थो से वायु बनता है और वायु अर्थराइटिस का मख्य कारण है।

✡तले भुने पदार्थ पापड, डिब्बा बंद वस्तुये न खाये। करेला, ककडी, लौकी, परवल, सहजन कच्चा केला, पपीता, कुंदरू फायदे मंद है।

✡व्यायाम, टहलना, कब्ज को नष्ट करने वाले उपयुक्त सब्जियें का सेवन करें। मसालों का सेवन कम कर दें सतंरा अर्थराटिस मरीजों के लिये लाभप्रद है।

✡विटामिन सी का प्रयोग करें अधिक तकलीफ मे गोली भी विटामिन सी की ले सकते है। प्रोटीन का प्रयोग करे जो दालें मूंगफली पनीर मांस मछली अंण्डा, प्रोटीन तत्वों में प्यूरिज्म का पाचन होने से वे युरिक एसिड में परिवर्तित होने लगते हैं जिसमें अर्थराइटिस का प्रकोप हो जाता है। जीवनचर्या में बदलाव लायें। इसमें सिर्फ एलोपैथ दवाइयों से दर्द से अस्थाई लाभ मिलता है। अतः परहेज आवश्यक है। एक्यूप्रेशर के उपचार से लाभ सम्भव है। ❍

बम्पर छूट बम्पर छूट बम्पर छूट

पत्रिका के वार्षिक/द्विवार्षिक/आजीवन सदस्य बनिए और जीतिए हजारों रूपयें के ईनाम पत्रिका के तीसरी वर्षगांठ के अवसर पर

सदस्यता राशि में 30 सितम्बर2003 तक विशेष छूट

समय पर मासिक पत्रिका "विश्व स्नेह समाज" अब आपके दरवाजे पर

lnL;rk QkeZ

मैं श्री/मि0/श्रीमती .... पुत्र/पुत्री/पत्नी श्री .... निवासी .... व्यवसाय .... फोन न0 मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज का वार्षिक/द्विवार्षिक/ पंचवर्षिय/ आजीवन सदस्य बनना चाहता हुॅं। इस हेतु रुपये .... मात्र शब्दों में ...... नकद/डीडी/मनिआर्डर/ से भेज रहा हुॅं/ रही हुॅं। **नोटः** 1. निवासी की जगह पर पत्र व्यवहार का पता ही लिखे। 2. पत्रिका डाक से देर से मिलने पर पत्र के माध्यम से अवश्य सूचित करें हम आपके लिए दूसरी प्रति भेजने का प्रयास करेंगे।

भारत में: मूल्य वार्षिक (साधारण डाक से) रु030/00, **विदेशों में** (नेपाल व भूटान को छोड़कर) साधारण डाक से रु0 150.00, **आजीवन सदस्य** : रु0 700.00 भुगतान का माध्यम चेक / मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट। इलाहाबाद से बाहर चेकों के लिए रु0 20.00 अतिरिक्त राशि देय होगी। कृपया चेक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर निम्न पते पर भेजें।

foKkiu iazca/kd% ekfld if=dk ß**fo'o Lusg lekt** Þ] ,y-vkbZ-th-&93] uhe ljk;] dkWYksuh] eq.Msjk] bykgkckn

yachmezdk jgL;

dkf'kaxVUAHkw[k lsde [kkusdkysyksxksadh mez yachgksrhgSAvesfjdh fOkKfu;ksadk dguk gS fdmUgsabl jgL; dk irk py x;k gS fd de [kkusdkysyksxksadhvk;qyach gksrhgSAblfn'kkesaiz;ksx ds nkSjku ldkjkRed vkSj mRlkgtud izxfr gqbZ gSA fOkKfu;ksadknkokgS fdde dSyksjh ysus lsmez c<+rhgSA lkbal tuZyesaNih ,d [kcj dseqrkfcdefD[k;ksaijv/;;uds nkSjku irk pykgS fdvkjihMh3 mez c<+kus okykbatkbegSA 'kks/kdrkZ IVhokVZ Ýsa Sadyck dk dguk gS fd 'kjhj esabl ,atkbe dh de ek=k ls mez yachgksstkrhgSSAtkfgjgSvf/kd [kkus ls blch ek=k c<+rhgSA Lru/kkfj;ksavkSj efD[k;ksaesa cgqr ls thu lekuk gksrs gSA blfy, fOkKfu;ksadkdguk gS fdT;knk fnu rd thfor jgukpkgrs gSa] rks de [kk,A

iSahl gkjdkEkTiM+

eqadbZ Abaa LisDVj t;izdk'k us tXUkFkikfVy dks burh tksj ls pkaVk ekjk fdmuds dku dk inkZ QVx;kA vnkyr us t;izdk'k dh bl ^cgknqjh^ ds cnys tXUkFkdks 6 izfr'kr C;kt ds lkFk 35 gtkj :i;s a eqvkotk nsus dk vkns'k fn;k gSA bal isDVj t;izdk'k us ;g FkIiM+ 1993 esa ekjk FkkA

IykfLVd dh xksyh ls dkcw vk;k luch

XosaVkArydkj fn[kkdj ykxksa dks Mjkus dks luch dks dkcw ikfy;kx;kA ysfdu ?kVuk dh tkap ds vkns'k ls iqfyl dks Li"Vhdj.k

ds fy, dkQh Hkkxnks M+ djuk iM+ jgk gSA ikaS Vhiwy ds fudV ySaM QsMdkj ikfdZax eas iqfyl vf/kdkfj;ksa dks ml le; vkuk iM+k tc vk/kh jkr dks ,d vkneh us viuh

rydkj dk [kkSaQ fn[kkdj iqfyl dks Mjkus dh dksf'k'k dhA bal isDVj IVho Vsyj ds vuqlkj ml vkneh ij IykfLVd dh xksyh nkxdj dkcw fd;k x;kA iqfyl ds vuqlkj mls ekewyh pksV vkbZ A gkykafd XosaVch iqfyl us ?kVuk dh tkap 'kq: djrs gq, f'kdk;r vf/kdkjh rd blch lwpuk igqapk nhgSA

gkFkh ds fy, twrsa rS;kj gks jgs gSa&

fn;ar ioqjeA ;gka ,d eafnj eas /kkfeZd dk;Z esa lg;ksx djus okys ,d gkFkh ds fy, twrs cuk, tk jgs gSaA 76 o"kZ; x.ks'k uiSj esa t[eh cotgl s cgqr jgh ijs'kku jgrk gSA bykt ds dkotwn mls dksbz ykHk ugha gqvk gSA ?kkoesa eknn Hkj tkus ls mls pyus&fQjus eas eqf'dygks jgh gSA blu fnuksa fiQ;fVadjk dk ,dek s phx.ks'k uds fy, twrs cukus esa tqVk gqvk gSA i'kqvksa ds MkWDVjksa us laØe.k ls cpus ds fy, gkFkh dks twrs igukus dh lykg nh gSA x.ks'k u fNys dbZ fnuksa ls ?kko ls ijs'kku gSA ogges'kk ;k=k ,adjrk jgrk

gSA blfy, mlds iSj ds ryos ls nok gVtkrh gSa /kwy vkSj xanxh ds dkj.k ?kko esa eokn Hkj tkrk gSA

th,e VekVj cusxk

gsisVkbfVl dh chekjh dk

phu ds fOkKkuh bu fnuksa gsisVkbfVl ch dk Vhdk fodflr djus esa tqVs gq, gSaA blds fy, fOkKkuh ftusfVd yh ekWfMQkbM VekVj ij v/;;u dj jgs gSaA ;gka ls izdkf'kr gksus okys ,d v[kckj pkbuk Msyh esa Nih ,d [kcj ds eqrkfcd phu ds 'kks/kdrkZvksa us th,e VekVj fodflr fd;k gSA

,dlkFk xawth ikap fdydkfj;ka

U;w;kWdZA ,d ukbthfj;kbz efgyk us 'kfuokj ds fdlh dkaVhdWfLiVy esa ikap cPpksa dks tUe fn;kA 28 o"kZ; vksekseksyksyk vkslsdkle ds ?kj pkj csfV;ka vkSj ,d csVk vk;k gSA tPpk o cPpk dh gkyr fLFkr gSA ltZjh ls gq, cPpksa esa gj ds dk otu rdjhcu 900 xzke gSA

इधर–उधर की

आप भी इस स्तम्भ के लिए कुछ खास खबरें जोआपके संज्ञान मेंहोया कोई नया आविष्कार हुआ होतो हमें भेज सकते हैं। अच्छी खबर को हम अवश्य ही प्रकाशित करेंगे। अच्छी खबरें के छपने पर हम आपको हजारोंरुपये के ईनामी कूपन भी भेजेंगे तो देर किस बात की। कलम उठाइए और लिख भेजिए हमारे पते पत्र–व्यवाहार के पते पर।

वह कौन है???

बहुत लम्बे अर्से से हम एक दूसरे से परिचित हैं। लेकिन अब हमारी और तुम्हारी मुहब्बत तेजी से बढती जा रही है। गर्मियों में तुम प्रतिदिन आती रही हो। जिस समय भी तुम आयी मैने तुम्हारी खातिर की और मैं तुम में खो सा जाता था। मेरे पिताजी तुम्हें कुछ नहीं कहते थे। वह जानते थे कि तुम अच्छी हो। गर्मी कडाके की पडती थी। मैं दोपहर में बाहर जाने की तैयारी करता तो तुम आकर मेरा रास्ता रोक लेती थी। तो भला तुम जैसी सुन्दरी को छोडकर मैं कहॉ जा सकता था। कभी-कभी तुम्हें देखकर मेरे दोस्त बाहर से ही चले जाते थे। उन्होंने तुम्हारे बारे में शिकायत भी की। लेकिन मैनें उनसे कह दिया कि जब भी वह तुम्हें मेरे पास देखें तो चले जाया करें। वे मुझसे नाराज भी हुए लेकिन तुम मुझे उनसे अधिक प्रिय थी। मेरे मित्र कहते तुम मुझे एक दिन जरूर धोखा दोगी, परन्तु मैं उनकी बात पर ध्यान नहीं देता था। लेकिन उस दिन के ऐक्सीडेंट ने मुझे झकझोर दिया, जब मैं कुर्सी पर बैठा पढ रहा था। और तुम आ गयी और मैं किताब भी पढना भूल गया और तुममें ऐसा खो गया कि किताब मेरे हाथ से गिर गयी। तभी मेरे पिताजी आ पहुँचे और उन्होंने मेरे साथ देख लिया। उस समय तो उन्होंने कुछ नहीं कहा। सुबह होने पर उन्होंने मुझे बुलाकर पूछा कि क्या वह रोज इसी समय आती है? मैने झूठ बोल दिया कि नहीं। परन्तु उन्हें शक हो गया और कह दिया कि तुम्हें पी०सी०एस० की परीक्षा देनी है। यदि यही हाल रहा तो तुम कभी पास नहीं हो सकते। उन्होंने कहा-तुम्हारी मॉ ने कई बार मुझसे कहा

✍ मोहम्मद तारिक ज्या "दिलवर"
ब्यूरो जौनपुर,

परन्तु कल मैने अपनी ऑखों से देख लिया। अब सफाई पेश करने की कोई जरूरत नहीं है। मुझे तुम्हारी वजह से ही उस दिन इतनी बातें सहनी पडीं, तुम्हें तो बदनामी का कोई डर नहीं परन्तु मेरा ख्याल रखों यदि मैं परीक्षा में फेल हो गया तो मेरी कितनी बदनामी होगी। जिस दिन भी तुम आती हो मैं बिजली बुझा कर तुम में खो जाता हूँ।

तुम्हारी इतनी बडी कहानी सुनने के बाद मेरे मित्र यह भी जानना चाहेंगें कि वह परी कौन है? वैसे तो मुझे शर्म आ रही है, फिर भी मैं आप लोगों को निराश नहीं करूँगा। तो सुनें उसका नाम है-''नींद''।

मनहूस

✍नीलेश चौहान

नई नवेली दुल्हन कांती पर, अपनी ससुराल में कदम रखते ही व्यंग रूपी बाणों की वर्षा होने लगी थी। मुंह दिखाई रस्म में भी उसे तरह–तरह की बातें सुनने को मिलने लगी।
"दुल्हन तो ठीक है, किन्तु दहेज में कुछ खास लेकर नहीं आयी।" पड़ोसन ने व्यंग्य किया
"अरे! ऐसी सुन्दरता भी किस काम की, तुम्हें नहीं मालूम ये मनहूस कितनी है।?" कांति की चाची सास बोली!
"हां सुना तो है। पैदा होते ही अपनी मां को खा गयी थी, जब सगाई हुई तो यहां इसके ससुर का पैर टूट गया। और जब से ब्याह कर आयी है। तब से सास तो पलंग पकड़ गयी।" बुआ सास ने पड़ोसन के समक्ष कांति के मनहूस होने वाले सभी तथ्यों को खोल दिया था। तभी डाकिये ने दरवाजे पर दस्तक दी।
"रजिस्ट्री है, योगेश के नाम से उन्हें बुलाइये दस्तखत करवाने हैं।" यह सुनते ही कमरे में कानाफुसी शुरू हो गयी थी। जिसकों कांति ने भी सुना।
"पर यह डाकिया न जाने कौनसी मनहूस खबर लेकर आया होगा, मेरा दिल घबरा रहा है। न जाने कैसे–कैसे विचार आ–जा रहे हैं। एक योगेश ही घर में बचा है। जिस पर पत्नी की मनहूस छाया नहीं पड़ी थी सो उसके नाम भी रजिस्ट्री आ गयी।" यह कांति की ननद की आवाज थी। जिसको सुन एक बार तो कांति का दिल भी धड़क गया।
इधर योगेश रजिस्ट्री खोल रहा था और कांति का दिल डर की वजह से बेकाबू था।
रजिस्ट्री पढ़ते ही योगेश खुशी से उछल पड़ा।
"दीदी, मेरा नियुक्ति पत्र आया है। मेरा चयन आर्मी कोर्स में अधिकारी के पद पर हुआ है। दीदी, कांति कितनी भाग्यशाली है न उसके घर में कदम रखते ही, मेरा नियुक्ति पत्र आ गया।" आवेश में योगेश ने दीदी को गोद में उठा लिया।
महिलाओं का मुंह देखने लायक था। कांति बेचारी घूंघट में समझ ही नहीं पा रही थी कि वह मनहूस या भाग्यशाली?

रोमांच

✍हरीश कुमार 'अमित'

लोकल बस में भीड़ बहुत थी। खिड़की के साथ वाली सीट पर बैठे हुए मेरी आंखे बार–बार उस सुन्दर–सीस युवती से जा टकराती जो छत पर लगा डंडा पकड़े खड़ी होकर सफर कर रही थी। वह युवती अपने साथ खड़ी एक और युवती से बातें करते हुए बीच–बीच में मेरी ओर भी देख लेती। उसका

यूं देखना मुझे बड़ा रोमांचित कर रहा था। मेरा यह आत्मविश्वास फिर से प्रबल होने लगा था कि इस अधेड़ उम्र में सफेदी झलका रहे बालों और दाढ़ी के साथ भी मैं किसी के आकर्षण का केन्द्र हो सकता हूँ।

कुछ देर बाद मेरा स्टाप आने को था। न जाने उतर जाने का खयाल मुझे उदास कर रहा था। न जाने फिर कभी इस युवती से मुलाकात हो भी पाएगी या नहीं। मैं इन विचारों में खोने लगा था।

सीट छोड़ने का वक्त आया तो मैंने एक बार फिर उस युवती की ओर देखा। तभी उसने भी अपनी नजरें मेरी ओर डाली। उफ! कैसे–कैसे समुन्दर मचल रहे है। इन आंखों में यह सोचते हुए मैं सीट से उठ खड़ा हुआ और उस युवती के पास से निकलते हुए बस के अगले दरवाजे की ओर जाने लगा।

अपनी ओर से मैंने भरसक कोशिश की थी कि अगले दरवाजे की ओर जाते समय उस युवती का अधिक से अधिक स्पर्शलाभ पा सकूं पर भीड़ इनती ज्यादा थी कि तब तक वह युवती मेरी खाली सीट पर बैठने के लिए बढ़ने के लगी थी। यह सोचकर कि वह युवती मेरी सीट पर बैठेगी, मेरा रोमांच और बढ़ गया।

काफी भीड़ होने के कारण अगले दरवाजे की ओर जाना आसान नहीं लग रहा था। कई कोशिशें करके भी मैं एक दो कदम ही आगे बढ़ पाया था। तभी पीछे से मुझे उस युवती की आवाज सुनाई दी। वह अपनी सहेली से कह रही थी, "आजा, तू भी एडजस्ट हो जा। न जाने क्यों मुझे लग रहा था कि यह दाढ़ीवाला जल्दी ही उतर जाएगा। इसकी सीट पर मेरी नजर काफी देर से थी। आखिर मिल ही गई उसकी सीट।" इसके साथ ही उन दोनो की सम्मिलत हंसी सुनाई दी। मेरा सारा रोमांच काफूर हो चुका था।

पिनकोड क्यों

संस्कृति द्विवेदी

भारतीय डाक विभाग ने डाक पत्रों को गति देने एवं गंतव्य पर पहुंचाने के लिए समय-समय पर विभिन्न विधियों का प्रयोग किया है। उनमें से एक विधि पिन कोड है। भारतीय डाक विभाग ने इसे १५ अगस्त १६७२ को अपनाया था। अब यह लोकप्रियता की ओर अग्रसर है। 'पिन' शब्द अंग्रेजी के तीन अक्षरों 'पी.आई.एन.' से मिलकर बना है। इसका विस्तृत रुप 'पोस्टल इंडैक्स नंबर' है।

'पिन' कोड में छह अंक होते है। इन अंको का अपना अलग अर्थ है। इस हेतु देश आठ भागों में विभक्त है। इन भागों को 'जोन' कहते है। पिन कोड का पहला अंक इन्हीं जोनों को प्रदर्शित करता है। दूसरा अंक रीजन या क्षेत्र दर्शाता है। एक रीजन कई डाक छटाई जिलों में बंटा है। तीसरा अंक इन्हीं जिलों को प्रदत्त है। चौथा अंक डाक रुट के लिए प्रयुक्त है। अंतिम दो अंक किसी डाक रुप पर स्थित डाकघर को प्रदर्शित करते है।

पिनकोड के अंकों को लिखने के लिए पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय पत्र, और लिफाफे पर वृत्ताकार या वर्गाकार छः खंड बने होते है। पिन कोड लिखे पत्र शीघ्र और सुरक्षित ठिकाने पर पहुंचते है। पिन कोड लिखने से एक सुविधा और भी है। पते में प्रदेश, जिला और डाकघर का नाम लिखने से मुक्ति मिल जाती है।

पिन कोड के महत्व को प्रतिपादित करने तथा उसके प्रचार-प्रसार के लिए डाक विभाग ने १४ अक्टूबर १६८६ को एक डाक टिकट जारी किया था। तीन रंगों में छपे इस आकर्षक टिकट पर डाक वाहक कबूतर चित्रित है। कबूतर गतिशीलता का प्रतीक है। पिन कोड में यही भावना निहित है।

dqN [kkl tkudkjh

१. विश्व में सबसे अधिक साइकिलों का इस्तेमाल चीन में होता है। वहां इनकी संख्या २० करोड़ से भी अधिक है।

२. हमारी आंखे ४५० किलो मीटर प्रति घंटा की रफ्तार से दिमाग को खबर पहुंचाती है।

३. एक सामान्य व्यक्ति को सोने में लगभग सात मिनट का समय लगता है।

४. भारत में रविवार की छुट्टी सन् १६४३ में शुरु हुई

५. कम खाने की तुलना में कम सोने से मनुष्य की मृत्यु कहीं जल्दी होती है।

६. रिक्शा का आविष्कार एक अमरीकी बेरिष्ट मिनिस्टर द्वारा सन् १६८८ में जापान में किया गया था।

७. रोज खाया जाने वाला नमक सोडियम व क्लोरिन दो अखाद्यों से बना है।

८. जो आपका जन्म दिन है, वही दुनिया के एक करोड़ से अधिक लोंगों का जन्म दिन होता है।

६. मनुष्य के शरीर में इतना फास्फोरस होता है उससे माचिस की २२० तीलियां बनाई जा सकती है।

आपकी जुबान

वर्तमान शिक्षा पद्धति में क्या सुधार हो सकता है।

हर व्यक्ति का एक मानसिक स्तर होता है। यह बुद्धि शिक्षा से प्राप्त बुद्ध व ज्ञान से भिन्न है। जिसके आधार पर वह अपनी प्राथमिकतायें निश्चित करता है। ग्रामीण क्षेत्र के लोगों या अन्य लोग जो पिछड़े हैं। उन्हें शिक्षित कर उनके विकास को प्रयास रत सरकार अनेक कदम उठाती है पर पूर्णतः वे सफल नहीं होते। इसके पीछे मेरी सोच ये है कि हम शिक्षित ही ये निर्णय लेते हैं कि पिछड़े लोगों को विकसित करेन के लिए उन्हें शिक्षा की जरूरत है। अतः शिक्षा का महत्व हम शिक्षितों को ही पता है। ग्रामीणों या अन्य पिछड़े वर्ग के लोगों को नही। वह सब अपनी अन्य प्राथमिकताओं के हिसाब से अपनी जरूरतों को निर्धारित कर उन्हें प्राप्त करने का प्रमाण करते है। उनकी प्राथमिकताओं में शिक्षा का कहीं कोई स्थान है ही नही। अतः सर्वप्रथम तो उन्हें शिक्षा क्या है? इसका महत्व, जीवन में इनका क्या उपयोग है, इन बातों से परिचित कराना होगा। इनके लिए पहला सोपान होना चाहिए परामर्श कक्षाएं, जिनके द्वारा उन्हें इन बातों की जानकारी देकर शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित करना होगा। इन कक्षाओं में आने के लिए सरकार प्रलोभन व अन्य तरीके इस्तेमाल कर सकती है। जब उनकी बुद्धि में बात बैठ जायेगी तो स्वयं वे सब शिक्षा ग्रहण करने आयेंगे। फिर उन्हें प्रलोभन देने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। सुविधाओं व सहयोग की सहायता से वे स्वयं अपना विकास कर लेगे। सबसे बड़ी बात है उनकी इस बात का एहसास दिलाना की उनकी सारी समस्याओं का हल जरूरतों कीपूर्ति एवं विकास के लिए शिक्षा ही ऐसी

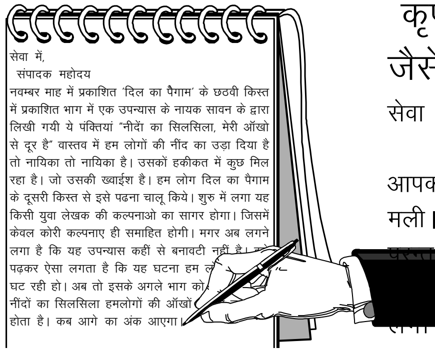

सेवा में,
संपादक महोदय
नवम्बर माह में प्रकाशित 'दिल का पैगाम' के छठवी किस्त में प्रकाशित भाग में एक उपन्यास के नायक सावन के द्वारा लिखी गयी ये पंक्तियां "नीदें का सिलसिला, मेरी ऑखो से दूर है" वास्तव में हम लोगों की नींद का उड़ा दिया है तो नायिका तो नायिका है। उसकों हकीकत में कुछ मिल रहा है। जो उसकी ख्वाईश है। हम लोग दिल का पैगाम के दूसरी किस्त से इसे पढना चालू किये। शुरु में लगा यह किसी युवा लेखक की कल्पनाओ का सागर होगा। जिसमें केवल कोरी कल्पनाए ही समाहित होगी। मगर अब लगने लगा है कि यह उपन्यास कहीं से बनावटी नहीं है। [illegible]
पढ़कर ऐसा लगता है कि यह घटना हम [illegible]
घट रही हो। अब तो इसके अगले भाग को [illegible]
नीदों का सिलसिला हमलोगों की ऑखों [illegible]
होता है। कब आगे का अंक आएगा।

सीढ़ी है जिसके सहारे वे अपने सपने पूरे कर सकते है, आगे बढ़ सकते है। क्योंकि कोई भी यहॉ किसी की मदद नहीं कर सकता। जब तक वह स्वयं आपकी मदद लेने को तैयार न हो। अतः जब तक की उनका सहयोग नहीं मिलेगा तब तक हम उनकी स्थिति में कोई सुधार नहीं कर सकते।

ज्योति नगरिया
अध्यापिका, नगरिया पब्लिक स्कूल, नैनी, इलाहाबाद

अच्छी सामग्री पढ़ने को मिलती है

सेवा में,
सम्पादिका जी, नमस्ते

मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' कभी–कभी मुझे पढ़ने को एक सहेली के यहॉ मिल जाती है। उसमें काफी अच्छी सामग्री पढ़ने को मिलती है। मई का अंक पढ़ा। रजनीश तिवारी 'राज जी' की ग़ज़ल "खामोश मत रहना तुम" बहुत पसन्द आई। मैं आपकी पत्रिका की नियमित पाठक बनना चाहती हुँ। कृपया उपाय इसके बारें मे लिखें। सम्भव है आप इसके बारे में हमें अवगत कराऐंगे।

कु0 सिम्पी श्रीवास्तव
48/12, चौक गंगादास, इलाहाबाद

कृपया 'रिश्तों का कैंसर' जैसे लेखों को न छापे

सेवा में,
सम्पादक महोदय

आपकी पत्रिका कहीं से मुझे पढ़ने के मली। सभी सामग्री लगभग ठीक लगी। [illegible] उसमें छपा एक लिखें 'रिश्ते का [illegible] एक निम्नस्तरीय विचारों से ओत–प्रोत [illegible]। ऐसे विचारों को क्यों आप समाज को बांटना–चाहते हैं। इस लेख में लेखक पाठकों को क्या संदेश देना चाहता है। समझ में नहीं आता है। कृपया ऐसे लेख छाप कर पत्रिका का स्तर खराब ना करें।

'निर्जल होता भारत' तथा सुप्रीया जी का लेख 'बुजुर्गो को प्यार और सहानुभूति भी चाहिए अच्छा लगा और शोभनीय लेख लगा।

मनीषा
48 बी, एलनगंज, इलाहाबाद

पाठकों से अनुरोध

इस बार हमारें सम्मानित पाठकों ने काफी उत्साह दिखाया है। आशा के विपरीत पाठकों ने पत्रों के द्वारा हमारा उत्साह बर्धन किया है। इसके लिए हम पाठकों के सदैव ऋणि है।

सभी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि उनकों पत्रिका कैसी लगी। पत्रिका में क्या कमियॉ है, क्या और डाला जाए क्या हटाया जाए आदि के बारें अपने विचार हमें निरन्तर भेजते रहें। आपके विचार ही हमारी सर्वोत्तम पूजीं है। **संपादक**

बेबाक

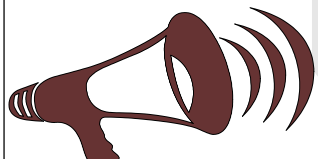

शर्तो के अधार पर गठबंधन नहीं हो सकता। कांग्रेस को अपने रूख में बदलाव लाना चाहिए।

कल्याण सिंह
राष्ट्रीय क्रांति पार्टी, अध्यक्ष

सिक्किम मुद्दा काफी हद तक हल किया जा चुका है।

यशवंत सिन्हा,
भारतीय विदेश मंत्री

मेरी समझ में नहीं आता, विहिप के नेता क्यों राम मंदिर निर्माण के लिए विधेयक लाने की मांग कर रहे हैं।

एम.वेकैया नायडू
भाजपा अध्यक्ष

छह दिसम्बर को दुहराना चाहती है भाजपा।

मुलायम सिंह यादव
राष्ट्रीय अध्यक्ष, सपा

रोज–रोज आने वाली हिंसा की खबरों से लोग सन्न रह गए है। सभी देशों की सरकारों से घरेलू समस्याओं को सुलझाने के लिए वार्ता की संस्कृति अपनाना चाहिए।

अटल बिहारी वाजपेयी
प्रधानमंत्री, भारत

देश की बुनियादी समस्याओं को लेकर मोर्चा बने।

चन्द्रशेखर सिंह
पूर्व प्रधानमंत्री, भारत

शांति के लिए सैन्यसंतुलन अनिवार्य है।

जनरल परवेज मुशर्रफ
पाकिस्तानी राष्ट्रपति

अयोध्या संकट का समाधान अदालत से ही हो।

ज्योति बसू
पूर्व मुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल

भाजपा अगले साल होने वाला आम चुनाव में सुरक्षा और विकास के मुद्दे को उठायेगी।

लालकृष्ण आडवाणी
उपप्रधानामंत्री, भारत

माफियाओं और लूटेरों की बसपा–भाजपा गठबंधन सरकार को राष्ट्रपति बरखास्त करें।

सोने लाल पटेल
राष्ट्रीय अध्यक्ष, अपनादल

मंदिर मुद्दे का हल अदालत व समझौते से नहीं।

अशोक सिंघल
अंतरराष्ट्रीय कार्याअध्यक्ष,विहिप

विदेशी महिला सोनिया गॉधी का कोई साथ नहीं देगा।

विनय कटियार
प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा

सार्वजनिक क्षेत्रों की पांचों कंपनियों में सरकारी हिस्सेसारी कम करने के लिए आईपीओ छह महीने के भीतर जारी किए जाएंगे।

अरूण शौरी
केन्द्रीय विनिवेश मंत्री

कल्याण सिंह ने रूकवाया गांवो का विकास।

सुश्री मायावती
मुख्यमंत्री, उ0प्र0

पार्टी की छवि बिगाड़ने वालों को पद से हटा देना चाहिए।

ओम प्रकाश सिंह
सिचाई मंत्री, उ0प्र0

काम के अधिकार को मौलिक अधिकार का दर्जा देना चाहिए।

रामविलास पासवान
अध्यक्ष, लोकजनशक्ति पार्टी,

मैंने ईमानदारी से धन कमाया है।

कपिल देव
पूर्व भारतीय क्रिकेटर

उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी राजनीतिक विरोधियों के साथ बदले की भावना से काम न करने की सलाह पंजाब के मुख्यमंत्री कै0 अमरिंदर को देने के बजाय मायावती को दे। जो चुन–चुन करराजनीतिक विरोधियों के उत्पीड़न पर उतारू है।

जगदंबिका पाल,
प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष

बधाई हो

दोस्तो बधाई हो। इस कालम के अन्दर आप अपने इष्टमित्रो, रिश्तेदारों, सहयोगियो इत्यादि के जन्मदिन/शादी शादी वर्षगांठ/ होली/ परीक्षा पास करने पर/नौकरी प्राप्त करने पर/प्रमोशन इत्यादि पर बधाई संदेश भेजना चाहते है तो आपको अपना संदेश, संदेश प्राप्त करने वाले व्यक्ति का पता व 50.00 रुपये मात्र देना होगा। अगर आप फोटो भी छपवाना चाहते है तो आपको 75. 00रुपये व फोटो देना होगा। आपका संदेश पत्रिका में छपेगा और पत्रिका परिवार उस अंक को आपके द्वारा दिये गये पते पर डाक से भेजने की व्यवस्था करेगा।

M-Tech

(COMPUTER EDUCATION CENTRE)

इग्नू द्वारा संचालित : एम.सी.ए, बी.सी.ए. सी.आई. सी., डी.सी.ओ,

डोयेक नईदिल्ली द्वारा संचालितः ओ लेवल, ए लेवल

एम.सी.आर.पी. विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा संचालित : पीजीडीसीए, डीसीए एवं **अन्य कोर्सेस :** टैली, जॉवा, विजूअल बेसिक, आटो कैड, सी++,3डी होम, ओरेकल, इंटरनेट

कम्प्यूटर द्वारा कुन्डली, जॉब वर्क, प्रोजेक्ट वर्क,विजिटींग कार्ड, शादी कार्ड, थीसीस

एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, कौशाम्बी रोड, धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद

सम्पर्क करेः

शाखाः एल.आई.जी 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

With Best Compliment From

Phone: 2504922(R)

HAUSALA PRASAD MISHRA

Dando. Karchhana, Allahabad

Government Contractor and General Order Supplier

T;sfr'kkL=h

vkfn'kfDr mikld T;ksfr'kkpk;Z

izseefookg] ukSdjh] O;olk;] cjdr] dtZ] larfr] x`gdys'k] ekufld ck/kk] djuh] rykd] inksUufr] dksVZ] 'kfu ihM+k] jktuhfrd] dkLrqnks'k] f'k{kk] 'k=qeqfDr] fons'k] fookg] gLrjs[kk o dq.Myh fon

'kqDyk th] e-u- 1041] dkdkdkx vkj-ds- dksfpax lsUVj xyh ds vUnj] lehi cyqvk?kkV pkSjkgk] bykgkckn le;% 8 ls 8 cts rd

3 fnu esa Qjd u iM+s rks iSls okilA

सुखी वैवाहिक जीवन

मर्दाना कमजोरी तथा गुप्त रोगों का इलाज बिजली एवं दवाइयों द्वारा

परीक्षा फीस रू0 100/— मात्र, इलाज की फीस रोग के अनुसार

समयः प्रात : 10 से 1 सायं 5.00 से 7.30

डॉ. दीवान हरबंश सिंह क्लीनिक

3] f'kopju yky jksM ¼fo'oEHkj fuosk ds lkeus½] bykgkckn Qksu- 2401076

जनपद कौशाम्बी में चालू वर्ष 2003–04 में किये गये अन्य स्वास्थ्य कार्यक्रमों की सेवाएं

मलेरिया– माह जून03 मलेरिया रोधी माह के रूप में मनाया जा रहा है। जिसमें जन जागरूकता के विभिन्न कार्य सहित प्रचार–प्रसार कार्य किया रहा है। फाल्सीपेरम केस निकलने पर तुरंत छिड़काव के निर्देश निगत है। जिला इपिडेमिंक सेल गठित है।

अन्धता निवारण– 95 मोतिया बिन्द के आपरेशन जून 03 तक हुए है। साधारण विधि से तथा लैंस प्रायारोपण विधि से शिविर में नेत्र आपरेशन किया जाता है।

राष्ट्रीय कुष्ठ निवारण– नये कुष्ठ के रोगियों की खोज की जाती है। उन्हें तथा पुराने रोगियों को उपचारित किया जाता है। अब प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों से दवा देने का प्राविधान किया गया है।

अल्परक्ता से बचाव– आइरन फोलिक एसिड की 0.5 mg(बड़ी) गोली गर्भवती महिलाओं को तथा 0.1 mg की छोटी गोली बच्चों को 100–100 गोली दी जाती है।

विटामिन 'ए' – घोल–बच्चों को यदि 0 से 1 वर्ष तक हैं तो 1ml तथा 1 से ऊपर आयु के बच्चों को 2ml 6 माह के लिये दी जाती है। प्रत्येक 6–6 माह पर खुराकें दी जाती है।

प्रतिरक्षीकरण (टीकाकरण)– 0 से 1 वर्ष तक के बच्चों को डी0पी0टी0 पोलियों बी0सी0जी0 तथा खसरे की खुराकें दी जाती है। डी0पी0टी0 पोलियों की 3 खुराक तथा बी.सी.जी.मेडल की एक–एक खुराक पूरी होने पर बच्चें को पूर्ण प्रति रक्षित माना जाता है।

टेटनेस से बचाव– गर्भवती महिलाओं को महिला कार्यक्रर्मी पंजीकृत करके अन्तराल से दो खुराक देती है। मातृत्व लाभ योजना– दूसरे गर्भ तक की गर्भवती महिलाओं का प्रत्येक ब्लाक पर प्रति 123 तारिख को शिविर लगता है तथा जिन्हें नहीं लगा होता हैं उसे टेटनेस का टीका लगता है। उपयुक्त महिला को 500/– का चेक देकर लाभान्वित किया जाता है।

क्षय रोग नियंत्रण– प्रत्येक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र/सा0स्वा0 केन्द्र पर बलगम रोगी, नये बलगम रोगियों की जांच एवं उपचार किया जाता है।

स्वास्थ्य जागरूकता (एड्स/यौन जनित रोग)– 16 जून 03 से 30 जून 03 तक टीमें बनाकर रोगियों का सर्वे कार्य अभियान चल रहा था तथा 1 जुलाई 03 से 15 जुलाई 03 तक शिविरों पर चिन्तित सम्भावित व्यक्ति आकर चिकित्सक से जांच करायेंगे तथा परामर्श लेंगे। जनता में बचाव हेतु जागृति लाई जा रही हैं।

डा0 एच0आर0आज़मी
मुख्य चिकित्साधिकारी,
कौशाम्बी

आर.एस.वर्मा
जिलाधिकारी कौशाम्बी

डा0 रवीन्द्र प्रताप
उपमुख्य चिकित्साधिकारी, कौशाम्बी

डा0 राजेन्द्र बाबू
जिला प्रतिरक्षण अधिकारी, कौशाबी

विश्व स्नेह समाज
हिन्दी मासिक पत्रिका

Mobile:3155949, 2552444 Fax: 0532-655565

हमारा आगामी अंक सितम्बर 03 का

पत्रकारिता एवं जनसंचार विशेषांक

विशेषांक की अतिथि संपादक : योगमाया रीता मिश्र

☞ तीर्थराज प्रयाग भारत की संस्कृति राजधानी रहा है ☞ तीर्थराज प्रयाग भारत की राजनीतिक राजधानी रहा है
☞ तीर्थराज प्रयाग भारत की साहित्यिक राजधानी रहा है
☞ साहित्य और पत्रकारिता का दूध जल–सा सम्बंध है, दोनों एक दूसरे पर आश्रित है। अपने स्वरूप के लिए, अपने विकास के लिए, हम पत्रकारिता एवं जनसंचार विशेषांक के माध्यम से
☞ तीर्थराज प्रयाग की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ☞ तीर्थराज प्रयाग की राजनीतिक पृष्ठभूमि
☞ तीर्थराज प्रयाग की साहित्यिक पृष्ठभूमि के साथ

प्रयाग की पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास और प्रयाग के इतिहास प्रसिद्ध शीर्षस्थ पत्रकारों सहित वर्तमान अधुनातन पीढ़ी के कर्मठ युवा पत्रकारों की प्रामाणिक जानकारी तथा प्रयाग के जनसंचार माध्यमों का प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस आशा और विश्वास के साथ–

कि ☞ आप तन–मन–धन से ☞ विचारों और विज्ञापनों से ☞ अपने अमूल्य सुझावों से
हमें अविलम्ब अवगत कराने की कृपा करेंगे। तथा

तीर्थराज प्रयाग के पत्रकारों और प्रयाग की ऐतिहासिक पत्रकारिता के प्रति अपनी दृढ़ आस्था का परिचय प्रकट करके तीर्थराज प्रयाग की संस्कृति/राजनीति/पत्रकारिता एवं साहित्यकता को सादर अपना प्रणाम निवेदन करेंगे।

सम्पर्क सूत्र :

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	डॉ0 कुसुमलता मिश्रा	रजनीश तिवारी	मधुकर मिश्र
प्रधान संपादक	कार्यकारी संपादक	सहायक संपादक	संयुक्त संपादक

ekfld if=dk ^fo'o Lusg lekt^]

,y-vkbZ-th&93] uhe ljk;] dkWyksuh] eq.Msjk] bykgkckn] m0iz0]

,e-Vsd-dEI;wVj ,tqds'ku lsUVj] /kqLlkikoj gkml ds ikl] ihiyxkao] bykgckn] m0iz0 Hkkjr

विशेषांक विज्ञापन दरें निम्न है–

jaxhu dbj i`"B

1	vafre i`"B ¼Qqyist½	7000@&
2	eq[; i`"B vUnj dh rjQ ¼Qqy ist½	6000@&
3	vafre i`"B vUnj dh rjQ ¼Qqy ist½	5000@&
4	lsUVª ysLizM ¼osc`';ke½	4000@&
5	lkekU; Qqy ist	2000@&
6	vk/kk i`"B	1000@&
7	'kqHkdkeuk lans'k	500@&